मसलक ए सुफिया और ताज़िया शरीफ़

भाग-2

बहवाला

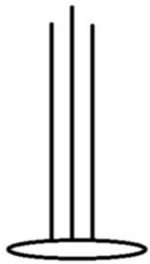
दीन ए मुहम्मदी और ताज़ियादारी

मुअल्लिफ़ : सूफी सईद मजहर अशरफी
मिनजानिब खानकाहे मुज्तबाइया अशरफिया
मोजअ : शम्भों पट्टी , पोस्ट बवारिया ,
जिला – वैशाली (बिहार)

मसलक ए सूफिया और ताज़िया शरीफ़
भाग -2

बहवाला

दीन ए मुहम्मदी और ताजियादारी



मुअल्लिफ़ : सूफी सईद मजहर अशरफी
(मिनजानिब खानकाहे मुज्तबाइया अशरफिया)
मोजअ : शम्भों पट्टी , पोस्ट बवारिया ,
जिला - वैशाली (बिहार)
उर्दू से हिंदी अनुवादक - मोहम्मद आतिफ अशरफी
YouTube Channel – Maslak-E-Sufiya

नोट - मोअल्लिफ सूफी सईद मजहर अशरफी की लिखी हुई सारी किताबें Google पर ऑनलाइन Pdf में उपलब्ध है

फेहरिस्त मज़ामीन दीन ए मोहम्मदी और ताजियादारी

1 निगाहे अव्वल – **मुअल्लिफ़**
2 मनकबत ताजिया शरीफ - **मुअल्लिफ़**
3 कुरआन और अज़ादारी
4 इमाम उल अंबिया और अज़ादारी
5 मुनाफिक कौन ?
6 करबला की मिट्टी
7 सूफियाए , उलमाये हक़ और सुन्नते नबवी ﷺ
8 सूफी तहरीक के बानी खुद नबी ए करीम ﷺ है
9 हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से पंजतन पाक की मुलाकात
10 हज़रत नूह अलैहिस्सलाम और पंजतन पाक
11 गौसुल आजम हजरत शेख अब्दुल कादिर जीलानी रह०
12 इमाम ए आजम हज़रत इमाम अबू हनीफा रह०
13 हज़रत इमाम शाफयी रह०
14 हजरत इमाम अहमद बिन हंबल रह०
15 हजरत इमाम मालिक रह०
16 हजरत ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती संजरी रहमतुल्लाह अलैह
17 शैखुल इस्लाम हज़रत बाबा फरीद शकरगंज रह०
18 हजरत सैयद अशरफ जहांगीर सिम्नानी मखदूम कच्छौछा रह०
19 हजरत ख़्वाजा बंदा नवाज गैसुदराज गुलबर्गा शरीफ रह०
20 हज़रत शैख मखदूम पंडवी रहमतुल्लाह अलैह

21 हजरत शैख अब्दुल रज्जाक बानवी रहमतुल्लाह अलैह
22 हजरत मौलाना शैख अब्दुल हक मोहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाह अलैह
23 हजरत मौलाना अब्दुल अजीज मोहद्दीस देहलवी रहमतुल्लाह अलैह
24 हजरत मौलाना शाह रफीउद्दीन मोहद्दीस देहलवी रहमतुल्लाह अलैह
25 हजरत मौलाना सालमत अली खां देहलवी , शागीर्द शाह अब्दुल अजीज मोहद्दीस देहलवी रहमतुल्लाह अलैह
26 मुफस्सिर ए कुरआन हजरत मौलाना अशरफ अली थानवी
27 हजरत मौलाना ख्वाजा हुसैन निजामी रहमतुल्लाह अलैह
28 हजरत मौलाना अब्दुल रहमान साहब मुफ्ती
29 कदवतुल मुहक्किकीन हजरत मौलाना हाफिज मोहम्मद खालिक साहब हनफी मरहूम
30 हजरत मौलाना नईमुल्लाह साहब कादरी गोरखपुरी मरहूम
31 हजरत मौलाना अब्दुल वाहिद फिरंगी महली रहमतुल्लाह अलैह
32 सुलतान उल आरिफीन हजरत नेयाज बेनि
याज शाह अहमद बरेलवी रहमतुल्लाह अलैह
33 ताजुल आरिफीन सैयद हाजी वारिस पाक आलम पनाह कुद्दूस सराहुल अज़ीज
34 सिराजुस सालेकीन हज़रत मौलाना सूफी मोहमम्द इफ्तेखारुल हक़ उर्फ बिस्मिल शाह करनी हिंद रहमतुल्लाह अलैह
35 हजरत इमाम अहमद रजा खान बरेलवी रहमतुल्लाह अलैह
36 शाह वलीउल्लाह मोहद्दीस देहलवी रहमतुल्लाह अलैह
37 हजरत ख्वाजा हसन बसरी रहमतुल्लाह अलैह
38 मआवीया बिन अबू सुफयान की मौत
39 हजरत इमाम हुसैन अलैहे सलाम के आखिरी अल्फाज
40 मदीना मनव्वारा की पामाली

41 काबा शरीफ पर हमला
42 दीन ए मोहम्मदी और सूफिया ए इस्लाम
43 वाकयाते करबला
44 इश्क ए मोहम्मदी को बिदअत कहा गया– रौजा ए रसूल को बड़ा बुत खाना कहा गया
45 ताजियादारी को बुत परस्ती कहा गया
46 अजादारी और ताजियादारी
47 यादें हुसैन को ताजियादार इबादत का एक रुक्न मानते है
48 हमारा मुल्क भारत
49 अंजुमन गुलामाने आले रसूल ﷺ
50 ताजियादारो से अपील

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

निगाहे अव्वल -

बहुत से दीनी हजरात ये सवाल करते हैं कि ताजिया शरीफ़ की इब्तिदा कब से हुई ?

जहां तक मेरे फिक्र की बात है कि हजरत आली मुकाम इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम की पैदाइश के दिन से ही ताजिया शरीफ की इब्तिदा हुई ।

हदीसे पाक की रौशनी में , जब इमाम आली मुकाम हजरत हुसैन अलैहिस्सलाम पैदा हुए तो हजरत कुलसुम रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने हुजूर सरवरे कायनात ﷺ की गोद में ला कर रख दिया और फरमाती है लीजिए ये हैं आपका नवासा - हुजूर पुरनूर ﷺ अपने नवासे को बगौर मुसर्रत भरी निगाहों से देखने लगे , उसी दरम्यान में हजरत जिबरील अलैहे सलाम तशरीफ लाए और फरमाते है ये जो आपकी गोद में आपका नवासा है आपकी उम्मत के लोग ही इनको शहीद कर देंगे और ये है इनके मकतल को मिट्टी जहां वह शहीद होंगे ।

हुजूर ﷺ इस खबर को सुनते ही शिद्दते गम में अश्कबार हुए और हिचकियां बंध गयी। हुजूर ﷺ का अश्कबार होना शहादत ए हुसैन की ख़बर सुन कर यही तो ताज़ियत है और लफ़्ज़ ताज़ियत से ताजिया बना है ।

किसी की शहादत या इंतकाल की ख़बर सुनकर शिद्दते गम में रोना इसी को ताजियत कहते है ।

हजरत इमाम आली मुकाम हुसैन अलैहिस्सलाम की शहादत के बाद अहले अकीदत मंदो ने आपका मकबरा जब कर्बला मोअल्ला में तामीर हुई , उसी मकबरा की शकल का ताजिया शरीफ बनाकर

यादगारे यादें हुसैन अलैहिस्सलाम मनाते है और नजराना ए अकीदत पेश करते है ।
अहले अकीदत हजरात ताजिया की जियारत करते है और फैज़ ए रूहानी हासिल करते है ताकयामत फैज़ ए रुहानी कायम और दायम है ।
हुजूर ﷺ ने फमाया मैं इल्म का शहर हूं और अली उसके दरवाजा है , सूफी सईद कहता है कि हजरत आली मुकाम इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम उस शहर ए इल्म के मुहाफिज है । बगैर मुहाफिज के कोई शहर कायम नही रह सकता ।

इसी मुकाम से हजरत ख्वाजा मोईनुद्दीन चिश्ती संजरी रहमत्तुल्लाह अलैहे फरमाते है -

शाह अस्त हुसैन, बादशाह अस्त हुसैन
दीन अस्त हुसैन, दीन-पनाह हुसैन
सरदाद न दाद दस्त, दर दस्ते- यजीद
हक्का के बिना, ला इलाह अस्त हुसैन

सूफी सईद मजहर अशरफी

मर्गे यजीदी अस्ल में कतले हुसैन है
इस्लाम जिंदा हो गया कार्बो बला के बाद
खून ए हुसैन का जरा ऐजाज़ देखिए
शीशी की मिट्टी सुर्ख है कतले शहा के बाद
दो

एक नजर -

हजरत ख्वाजा मोईनुद्दीन चिश्ती संजरी रहमतुल्लाह अलैहे 1174 ई० में हिन्दुस्तान तशरीफ लाए
और बादशाह तैमूर लंग 1398 ई० हिन्दुस्तान आए

1398 - 1174 = 222

बादशाह तैमूर लंग से 222 दो सौ बाइस साल पहले हुजूर ख्वाजा गरीब नवाज हिन्दुस्तान में तशरीफ लाए । उस वक्त से हिंदुस्तान में ताज़ियादारी क़ायम है ।

अज़कलम सूफी सईद मजहर अशरफी
"मनकंबत"
ताज़िया शरीफ

नबी के नवासे के दर का हूं सायल
हुआ जिनकी उल्फत में दिल मेरा मायल
न शिकवा किसी से ना फतवा दलायल
हुसैनी हूं मैं ताज़ियत का हूं कायल

तेरी ताज़ियत मे बना ताजिया है
बहत्तर शहीदों का ये ताजिया है

नबी ने चढ़ाया है कांधे पर अपने
लगाते रहे उनको सीने से अपने
वह खाते नहीं थे खिलाने से पहले
लगा ताजिया को फिर कांधे से अपने

तेरी ताजियत में बना ताजिया है
बहत्तर शहीदों का ये ताजिया है

अबू बक्र आए सदाकत बताने
उमर आ गए हैं अदालत दिखाने
गनी आ गए हैं गनायत लुटाने
हुसैन आ गए दिने अहमद बचाने

शहादत में तेरी बना ताजिया है
बहत्तर शहीदों का ये ताजिया है

मजारे मुकद्दस का नक्शा बनाया
सभी ने अकीदत से इसको सजाया
चूमा लबों से और कांधा लगाया
हुसैन इब्ने हैदर का नारा लगाया

इबादत के खातिर बना ताजिया है
बहत्तर शहीदों का ये ताजिया है

खुदा की रजा और नबी की अदा पर
कटाया है सर अपने सजदे में जाकर
मुकाम ए शहादत का रुतबा बताकर
जामे शहादत सभी को पिलाकर

शूजाअ़त में तेरी बना था ताज़िया है
बहत्तर शहीदों का ये ताज़िया है

कर्बला तेरी अज़मत पर कुर्बान जाऊं
तेरी खाक को अपने माथे लगाऊ
तेरी याद में रो रो आंसू बहाऊ
मेरा दिल ये कहता है कुर्बान जाऊं

मोहब्बत में तेरी बना ताजिया है
बहत्तर शहीदों का ये ताजिया है

हुसैन इब्ने हैदर ने सब को सुनाया
सभी को सदाकत फजीलत बताया
नबी और अली की हकीकत दिखाया
मगर कूफीयों को समझ में ना आया

तेरी मा़र्फत में बना ता़जिया है
बहत्तर शहीदों का ये ता़जिया है

बहत्तर शहीदों के जुल्मों सितम में
हुसैनी हूं ,आंसू बहाता हूं गम में
मेरा मरना जीना है तेरे करम में
पड़े रह गए जो अभी तक वहम में

ज़ियारत के खातिर बना ताज़िया है
बहत्तर शहीदों का ये ताज़िया है

ताजिया की हकीकत समझते हैं अनपढ़
चले आते हैं मरने वाले के घर पर
शरीक होते हैं गम में आंसू बहा कर
कोई जा रहा है अपना दामन बचाकर

सदाकत में तेरी बना ताजिया है
बहत्तर शहीदों का ये ताजिया है

बनाया है जिसने जहां फिरका बंदी
समझ हो गई जालिमो से भी गंदी
ये बुग्ज अदावत हुई कितनी सस्ती
रहमतो के सफीने में ये कौम रहती

हकीकत में तेरी बना ताजिया है
बहत्तर शहीदों का ये ताजिया है

ना लो नाम हरगिज़ कभी बेवफा का
वो मलउन है देखो सारे जहां का
रहे विर्द हरदम शहे ए कर्बला का
लुटा काफिला जब हबीबे खुदा का

बहाने को आंसू बना ताज़िया है
बहत्तर शहीदों का ये ताज़िया है

जुबा की तेहा़रत खतम हो गई क्यों
ये शीरी लताफत खतम हो गई क्यों
तुम्हारी सदाकत खतम हो गई क्यों
हुसैनी शुजाअ़त खतम हो गई क्यों

मिटाने को ज़ुल्मत बना ताज़िया है
बहत्तर शहीदों का ये ताज़िया है

काफिला दीने अहमद का करबल में जाकर
बहा खून सबका खुदा की रजा पर
हुए सुरखुरू दिन ए अहमद बचाकर
यही दे रहा है सदा तेरा मजहर

करामत से तेरी बना ताजिया है
बहत्तर शहीदों का ये ताजिया है

(सूफी सईद मजहर अशरफी)

दीन पर और मोहम्मदी और ताज़ियादारी

कुरआन और अजादारी -: अजादारी इमाम हुसैन की बुनियाद कुरान के 25 वे पारे की 32 वी आयत

كل لا ا اسعلكم عليہ اجرا الا المودة فی القربی

तर्जुमा महबूब ऐलान फरमा दीजिए कि मैं तुमसे कोई उज्र तलब नहीं करता सिवाए उसके कि मेरी अहले बैत से मोहब्बत मोअद्दत करो , सहाबा ए कराम रिजवानुल्लाहू तआला अलैहिम अजमईन ने खुदावन्द तआला का यह हुक्म सुना तो दरबार ए मुस्तफा ﷺ में अर्ज किया या रसूल अल्लाह ﷺ हमें फरमा दीजिए कि वह कौन क़रीबी हैं जिनकी मोहब्बत व मोअद्दत हम पर फर्ज कर दी गई है।
तो इमाम उल अम्बिया ﷺ ने फरमाया या अली व फातिमा वल हसन वल हुसैन वअनबाये हमा यानी अली, फातिमा , हसन, हुसैन और उनके बेटे - नजूल शूरा आयत 32 के बाद नबी ए करीम ﷺ ने फरमाया जो अल्लाह के उस हुक्म को मानेगा जन्नत में दाखिल होगा और कसम है उस ज़ात की जिसके हाथों में मेरी जान तुम्हारा कोई अमल तुम्हें नफा नहीं देगा । जब तक फरमाने खुदा के मुताबिक हमारा हक नहीं पहचानोगे फिर हुजूर ने फरमाया मेरी अहले बैत कश्ती ए नूह के मानिंद हैं जो शख्स कश्ती में सवार हुआ उसने निजात पाई और जो कश्ती में सवार होने से रह गया वह ह़लाक़ हुआ और फरमाया जो मोहब्बत ए अहले बैत मे फौत हो गया वह मोमिन फौत होगा और फरमाने मुहम्मद ﷺ है कि जो आले मोहम्मद की मोहब्बत सीने में लेकर फौत हो गया वह जन्नत का ह़क़दार है
जब आयत

انما یرید الله لیذهب عنکم الرجس اهل البیت و یطه تطهیرا

तर्जुमा ऐ नबी के घरवालों अल्लाह तो यही चाहता है कि तुमसे हर आलूदगी को दूर करके तुम्हें खूब पाकीजा कर दे तो इमाम उल अम्बिया ने आवाज दी अली आ जाओ बेटी फातिमा तुम भी आ जाओ और हसन और हुसैन को भी साथ लेती आओ जब चारों नफूसे कुदस्सिया हाजिर हो गए तो आप ने अपनी तरफ अली दूसरी जानिब फातिमा को और जनाब हसन व हुसैन को गोद में लिया और अपनी काली कमली में छुपा कर अल्लाह की बारगाह में दुआ की या अल्लाह ये मेरे अहले बैत हैं तू इनसे हर आलूदगी को दूर फरमा कर खूब पाकीजा फरमा दे ।
इसलिए आप तमाम नफूसे कुदस्सिया को **पंजतन पाक** कहते है ।

जिसे अल्लाह पाक कर दे , वही तो पंजतन पाक हैं सहाबा ए कराम र०अ० ने हुजूर ﷺ से पूछा या रसूल अल्लाह आपको अहले बैत में किस के साथ ज्यादा मोहब्बत है ?
आपने फरमाया मर्दों में अली के साथ औरतों में खातून ए जन्नत फातिमा रजि० के साथ और सबसे ज्यादा सरदाराने जन्नत हसन और हुसैन से मोहब्बत है ।

इमामुल अंबिया और अजादारी

हुजूर सरकार ए दो आलम ﷺ एक रोज दोनो कांधे पर हजरत इमाम हुसैन को सवार किए हजरत सैयदना अबुबकर सिद्दिक रह॰ के रूबरू उठाए हुए टहलते जाते थे हजरत उमर फारूक ने देखा तो कहा कितनी अच्छी सवारी है यह सुनकर हुजूर ने फरमाया है उमर सवार भी कितना अच्छा है जहां मैहर ए नबुवत है वहां हुसैन बैठे हुए हैं और हुजूर , अल्लाह से दुआ इल्तिज़ा करते जाते हैं कि ऐ अल्लाह

ये दोनों मेरे महबूब है इनसे जो भी मोहब्बत करें उसे तू भी अपना महबूब समझना । ईमान उल अंबिया ने बार -बार फरमाया है ।
हुसैन मिन्नी अना मिनल हुसैन तर्जुमा _ हुसैन मुझसे है और मैं हुसैन से हूं यानी दीन लाने वाला मैं हूं और दीन बचाने वाले हुसैन है आपने यह भी फरमाया
يا الحسن والحسين هما ريحانتاى ميں والرينا
तर्जुमा बेशक हुसैन हसन और हुसैन दुनिया में मेरे दो फूल हैं आपने फरमाया मेरा बेटा हसन और हुसैन नौजवान ए जन्नत के सरदार हैं बेशक मेरे दोनों बेटे सैयद हैं दोनों बेटों से जन्नत की खुशबू आती है

कौन मुनाफिक कौन ?

अबू सईद खुदरी र०अ० फरमाते हैं की हुजूर ﷺ ने फरमाया जो अहले बैत से बुग्ज़ रखेगा वह मुनाफिक है और यह भी फरमाया जो मेरी अहले बैत को सताएगा उस पर अल्लाह ताला का शदीद गजब नाजिल होगा । फरमाया हैं मेरी अहले बैत ईमान है मेरी उम्मत के लिए जो दूर करनी है इखतलाफो को_
पस जो कबीला या गरोह उनसे मुखालफत करेगा वह शैतान होगा

कर्बला की मिट्टी _

फरमाने हुजूर ﷺ है रवायत हैं हजरत अनस र०अ० बिन हारिस से हजरत इमाम अल फजल बिन हदस से हजरत सलमह से हजरत आयशा सिद्दीकह से हजरत अली से हजरत इब्ने अब्बास से हदीस मुतवातिर है ।

हजरत इमाम हसन और हजरत इमाम हुसैन खेल रहे थे तो देखा कि रसूल ﷺ की आंखों से लगातार आंसू बह रहे है उसी हालत में आपने उम्मे सलमा से फरमाया मुझे जिब्रील ने खबर दी कि मेरे इस बेटे को मेरी उम्मत शहीद करेगी फिर जिब्रिल ने मुझे उस शहादत गाह की मिट्टी दी और आपने फरमाया ऐ उम्में सलमा जब ये मिट्टी सुर्ख हो जाए तो समझ लेना मेरा बेटा शहीद हो गया फिर मैंने इस मिट्टी को शीशी में बंद करके रखा ।

जब जिब्रील ए अमीन ने हुजूर को हजरत हुसैन की शहादत की खबर दी और मकतले हुसैन की मिट्टी दी तो आपने यह खबर सुनकर आंसू बहाए और शहादत के रोज भी हजरत उम्मे सलमा ने आँ हुजूर ﷺ को ख्वाब में रोते हुए देखा आपने फरमाया मैं अभी अपने बेटे हुसैन की शहादत गाह में गया था उससे अंदाजा किया जा सकता है कि सरकार दो आलम के कल्ब अकदस को किस कदर रंजो गम पहुंचा होगा ।

ये उस बात की दलील है कि शहादत इमाम हुसैन के गम में आंसू बहाना सुन्नते रसूल अल्लाह है और ताजिया में मिट्टी रखना हजरत जिब्रील और उम्मे सलमा की फैल हुसना है चूंँकी हजरत उम्मे सलमा ने फरमाया नबी ﷺ के मुताबिक मुक्तिल हुसैन की मिट्टी को शीशी बंद करके रखी थी इसलिए आशिक ए अहले बैत 9 मोहर्रम के दिन ताजिया में मिट्टी रखते हैं और 10 मोहर्रम को मकसूस इलाकाई कर्बला में उसी मिट्टी को दफन करते हैं और हुसैन आली मुकाम से मोहब्बत मोअद्दत का सवाब हासिल करते हैं

एक मोहर्रम ता 40 दिनों तक पूरी दुनिया में यादें हुसैन मनाया जाता है और कर्बला में अलम हैदरी हजरत अब्बास अलमदार के हाथों में

थी आपने अपना दोनों बाजू कटा दिया लेकिन इस्लामी हुसैनी अलम को गिरने ना दिया ।

आज मुसलमान की आबादी में जो निशान अलम या इस्लामी झंडे मुहर्रम की मौके पर नजर आते हैं ये उसी नवासे रसूल के शहादत की यादगार है जबकि हर मुल्क अपना झंडा उड़ा रही है तो हम मुसलमान अपना इस्लामी और हुसैनी झंडा क्यों ना उड़ाए ये निशान व अलम हजरत इमाम हुसैन से मोहब्बत की निशानी है और बाइस ए अजरो सवाब है ।

सूफिया ए उलमाएं हक़ और सुन्नत ए नबवी ﷺ

कुरान की आयतें करीमह और नबी करीम ﷺ की हदीस की रोशनी में सूफिया ए कराम और उलमाए हक ने इस्लाम की तबलीग व कुरान ए पाक सुन्नते रसूल अल्लाह और मोहब्बते अहले बैत पर मबनी था । उसकी तबलीग हजरत ख्वाजा हसन बसरी , हजरत ख्वाजा जुनैद बगदादी ,हजरत मौलाना जलालुद्दीन रूमी, हजरत मौलाना अब्दुल रहमान जामी , हजरत सरकार ए गौसे आजम , हजरत ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती अजमेरी , हजरत शैख शहाबुद्दीन सहरवर्दी, महबूब ए इलाही हजरत निजामुद्दीन औलिया , हजरत मीर सैयद अली हमदानी, हजरत सैयद हाजी वारिस पाक आलम पनाह, हजरत कुमरीये हिन्द , हजरत वसीमुल्लाह शाह और दुनिया के तमाम सिलसिलो के सुफिया ए कराम ने अहले सुन्नत वल जमात के चारों इमाम - हजरत इमाम अबू हनीफा , हजरत इमाम शाफई , हजरत इमाम अहमद बिन हंबल और हजरत इमाम मालिक ने सुन्नते रसूल अल्लाह और मोहब्बत ए अहले बैत का हुक्म देकर कौम ए मुस्लिम को गुमराही और बुराई से बचा लिया ।

सूफी तहरीक के बानी खुद नबी ए करीम ﷺ है

सूफी तहरीक की बुनियाद तो खुद हुजूर ﷺ ने रखी जो सहाबा मस्जिद-ए-नबवी के सामने पत्थर के चबूतरे पर बैठे हुए दिन-रात यादे खुदा और इश्के मोहम्मदी में मशगूल रहते थे ।
जिन्हे असहाबे सुफ्फा कहा जाता था । बुखारी शरीफ में है कि हजूर ﷺ असहाबे सुफ्फा से बहुत मोहब्बत फरमाया करते थे कि असहाबे सुफ्फा दरवेश हैं और मालदार असहाब को हुक्म देते थे कि उन्हें खाना खिलाओ हजरत अब्दुर रहमान बिन अबू बकर फरमाते है कि असहाबे सुफ्फा फुकरा थे हुज़ूर की मौजूदगी में उनकी तादाद करीब साढे चार सौ थी । सत्तर लोगों के पास सिर्फ चादर तहबंद या कंबल थी । ये तमाम आशिक ए रसूल ﷺ और आशिक ए अहले बैत थे ।

(بُخاری شریف جلد اوّل باب ۲۹۹ کشف المعجوب صفہ ۱۵۲)

हज़रत आदम आदम से अलैहिस्सलाम पंजतन पाक की मुलाकात -

हज़रत आदम अलेही सलाम और हव्वा जन्नत के तख्त पर जलवा फरमा थे और अपनी अब्दी जिंदगी पर नाज़ा थे । हजरत जिब्रील अलैहिस्सलाम आए की हजरत आदम अलैहिस्सलाम को जन्नत के मनाज़िल और महलात की सैर कराएं हजरत जिब्रील आपका हाथ पकड़े एक ऐसे महल के सामने आए जिसकी एक ईट सोने की और

एक ही चांदी की थी , दरवाजे ज़र्द और अहज़र के बने हुए थे । महल के अंदर तख्त बिछे थे हर तख्त पे एक नूरानी मेहराब बनी हुई थी । उस तख्त पर एक हुस्नो जमाल का पैकर जलवा फरमा था जिसके सर पर एक नूरानी ताज जयापा शेया कर रहा था कानों में मोती हल्काह गोश थे गर्दन मैं नूरानी हमायेल आवेजाह थी । हजरत आदम उस मलेह हुस्न के पैकर को देख कर हैरत ज़दा हो गए अंगुश्त बदंदा हो गए। हव्वा के हुस्न व जमाल को फरामोश करते हुए कहने लगे ऐ अल्लाह यह कौन है ? मालिके कायनात ने फरमाया हजरत फातिमा अल जोहरा अलैहिस्सलाम की सूरत है जो सरकारे दो आलम की बेटी होगी सर पे ये नूरानी ताज आपके वालिद का साया नूर है यह नूरानी हार आपके शौहर नामदार हजरत अली कर्मुल्ला वज़हुल हैं कानो के दो अवीजे शहजाद गान हसनैन अलैहे सलाम है हजरत आदम अलैहे सलाम नज़र उठा कर देखा तो पांच दरवाजे खुले नजर आए हर दरवाजे पे एक किताब पड़ी है जिसपे कलमाऐ नूर से लिखा हुआ है ।

अल महमूद व हाज़ा मोहम्मद , दूसरी पर अना अल अली व हाज़ा अली, तीसरी किताब पर अना अल मां फातिमा व हाज़ा अल फातिमह लिखा हुआ है । चौथे पर अना अल हसन व हाज़ा अल हसन लिखा हुआ था पांचवे पर मिन्नी का हस्सान व हाज़ा अल हसन लिखा पाया ।

हजरत जिब्रील अलैहिस्सलाम में हजरत आदम अलैहिस्सलाम को कहा उन असमाये ग्रामी और कलमात नामी को याद कर लें शायद एक दिन उनकी बरकात से आप के मसाईल हल हो । जब एक वक्त आया कि हजरत आदम अलैहिस्सलाम तीन सौ साल तक एक इबतला में आकर रोते रहे हत्ता कि निदा ए गैब से ये रुहानी हासिल हुई तो आपने कहा **सहमुद व या अली इल्ला अली व या फातिमा व या मुहसिन व या मिनके अल एहसान अस अलोकह बिलजुम्लतह और फिर कहा बिहक़ मोहम्मद व अली व**

फातिमा अल हसन व अल हुसैन अन तगफिर्ली व तकब्बल तौउबती बिल फूर जनाब बारी ताआला से आवाज आई । ऐ आदम अगर उन पांच नामो की वसातत से अपनी सारी औलाद के गुनाहों की मगफिरत चाहते तो आज मैं तुम्हारी यह दुआ कबूल कर लेता यही वज़ह है कि कुरआन ए पाक में है कि

فتلقی آدم من ربہ کلمٰت فتاب علیہ

तर्जुमा सिख लिए आदम ने चंद कलमात अपने रब से और पंजतन पाक के सदके व तुफैल हजरत आदम की दुआ बारगाहे इलाही में कबूल हुई।

(معارج النبوت جلد ۲ صفہ ۳۰)

हजरत नूह अलैहिस्सलाम और पंजतन पाक

हजरत नूह अलैहिस्सलाम कश्ती बनाने में मशरूफ थे हुक्म हुआ उस कश्ती में एक लाख चौबीस हजार तख्ते बनाए जाएं और उस पर तमाम अंबिया इकराम_के असमाये गरामी तहरीर किए जाएं हजरत जिब्रील की मदद से ये असमाये गरामी मुर्तसिम कर दिए गए दूसरे दिन जब काम शुरू हुआ तो देखा कि तमाम असमाये महव हो चुके हैं दूसरे दिन लिखे तो ऐसा ही वाकया तीसरे रोज वही आई और हुक्म हुआ उन तमाम असमाये का आगाज हमारे नाम नामी से करो और खत्म मेरे हबीब मोहम्मद ﷺ और उनके अहले बैत पे करो इस तरह ये कश्ती अल्लाह की पनाह में रही और शैतान के हमले नाकाम हो गए । हजरत नूह इस गैबी तालीम की रोशनी में अंबियाएं कराम के असमाये गरामी को लिखते गए हैं खुदा ए रब्बुल आलमीन के नाम से आगाज किया आखिर में या मोहम्मद या अली या फातिमा या हसन या हुसैन के नाम नामी इसमे गिरामी को कुन्दह किया गया तो गैब से आवाज आई

يا نوح الان قدتمت سفينتک ऐ नूह अब तुम्हारी कश्ती मुकम्म हो गई इसीलिए हुजूर ने फरमाया - मेरी अहले बैत मशल कश्ती नूह के है जिसने सवारी कि वह पार हुआ जिसमें छोड़ा वह हालाक हो गया ।
(معارج النبوت جلد ٢ صفہ)

गौसुल उल आजम हजरत शैख अब्दुल कादिर जीलानी रहमतुल्ला अलैहे

फरमाते हैं कि जिस दिन हजरत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम ने शहादत पाई उस रोज 70 सत्तर हजार फरिश्ते उनकी कब्र मुबारक पर नाजिल हुए ये फरिश्ते आपकी मजलूमी और हालात ज़ार पर कयामत तक नोहा खवाँ रहेंगे ।
हजरत हमजा बिन जयात र०अ० फरमाते है कि मैंने हुजूर मोहम्मद ﷺ और इब्राहिम खलीलुल्लाह अलैहिस्सलाम को ख्वाब में देखा कि वह दोनों हजरत हसनैन अलैहे सलाम की कब्र पर नमाजे (जनाजा) पढ़ रहे है, गौस पाक फरमाते हैं उस दिन इमाम हुसैन बड़ी मुसीबत और मुजालिम बर्दाश्त करने के बाद शहादत पायी चुनांचा दुनिया से आप (हुसैन अलैहिस्सलाम) के रुखसत होने पर रंजो गम करना चाहिए ।

(غنیتہ الطالفین صفہ)

इमाम ए आजम इमाम अबू हनीफा र०अ०

इमाम आजम अहले बैत की बहुत ज्यादा इज्जत हो अजमत करते थे और आने अहबाब को मोहब्बत अहले बैत की ताकीद फरमाते और शौक दिलाते थे आप फरमाते हैं की हज़रत अली कर्रमल्लाहो वज्हू

तमाम लड़ाईयों में हक़ पे थे। अहले बैत की तरफदारी करने की वजह कर अब्बासी खलीफा अबू जाफर अल मसूर आपको कैद कर दिया , रोजाना आपको 10 दस कोड़े मारे जाते थे काफी दिनों तक कैद व बंद की सउबतें बर्दाश्त की आखिरकार डेढ़ सौ हिजरी में कैद खाना में ही आप को जहर खिला कर मार दिया गया आप की वफात एक सिद्दीकी व शहीद की मौत थी ।
(علامہ ابن جرانعیمی- موافق خرقہ صفہ ۱۰۸ حیات حضرت امام ابو حنیفہ صفہ ۱۰۰ تا ۱۰۲)

हजरत इमाम शाफई र०अ०

इमाम शाफाई फरमाते हैं कि ना तो राफजी मेरा मजहब है ना मेरा इत्तेकाद लेकिन हकीकत ये है कि बिलाशुबह आशिक ए आले रसूल हूं और गुलामे मौला मुश्किल कुशा हूं अगर अहले बैंत से मोहब्बत करने का नाम राफजी है तो बेशक ऐ दुनिया वालों दुनिया के लोगों गवाह रहना मैं तमाम इंसानों में सबसे बड़ा राफाजी हूं ।
(حالات حضرت امام شافعی)

हजरत इमाम अहमद बिन हंबल र०अ०

हजरत इमाम अहमद बिन हंबल फरमाते हैं कि इश्क ए अहले बैत फरमाने खुदावंदी और सुन्नत ए नबी ए करीम ﷺ है जो शख्स हजरत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम की याद में रोए उसके आंख से एक कतरा भी आँसू टपके तो खुदा उसके तमाम गुनाहों को माफ करके उसको जन्नत में जगह देगा ।

(مسند امام احمد بن حنبل)

हजरत इमाम मालिक र०अ०

इमाम मालिक र०अ० अपने असहाब व शागिर्दो को इश्के आले रसूल की तलकीन करते आप फरमाते है कि जिसने इश्के अहले बैत में अपनी जिंदगी गुजारी वह कामयाब व कामरान हुआ बिलाशुबह आशिक अहले बैत का मुकाम जन्नत है ।
(موطاء امام مالک)

हजरत ख़्वाजा मोईनुद्दीन चिश्ती र०अ०
हजरत ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती अजमेरी र०अ० फरमाते है।

शाह अस्त हुसैन, बादशाह अस्त हुसैन
दीन अस्त हुसैन, दीन-पनाह हुसैन
सqरदाद न दाद दस्त, दर दस्ते- यजीद
हक्का के बिना, ला इलाह अस्त हुसैन

तर्जुमा हुसैन बादशाह है , हुसैन बादशाह है , हुसैन दीन है , हुसैन दीन को पनाह देने वाले है । सर दे दिया , लेकिन यज़ीद के हाथ पे हाथ न दिया , हक तो ये है की **ला इलाहा इल्लल्लाह** की बुनियाद हुसैन है ।

तकरीबन 750 साल कब्ल हिंदुस्तान में ताजियादारी और एजादारी इमाम हुसैन अलैहे सलाम की रवायत 13 वीं सदी ई० से मिलती है । 1170 ई० में चिश्तिया सिलसिला के बानी ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती की हयात में ताजियादारी होती रही जिसका सिलसिला आज तक जारी है । **1 मोहर्रम** से लेकर **12 मोहर्रम** तक अज़ादारी इमाम हुसैन का प्रोग्राम अजमेर शरीफ में चलता है ।
7 मोहर्रम से **10 मोहर्रम** तक लोग ताजियादारी में मसरूफ रहते है । **5 मोहर्रम** को बाबा फरीद मसूद गंज शकर के उर्स के मौके पर बाबा साहब का चिल्ला खाना खुलता है । जिसमे ख्वाजा गरीब नवाज का **चांदी का ताजिया शरीफ** रखा हुआ है जायरीन इसकी जियारत से फैजयाब होते है । एजादारी इमान हुसैन से मुतल्लिक इस्तेलहात सूफियाए कराम ही की बदोलत है याद रहे ये शिया मुज्तहदीन या उलमाय कारनामा नही है इसलिए कि ये उनके वजूद से पहले की बात है ।
(راہ اسلام صفہ ٧٤_٦٧.)

शैखूल इस्लाम हजरत बाबा फरीद मसूद गंज शकर र०अ०

महबूब ए इलाही निजामुद्दीन औलिया र०अ० आशूरा के दिन बाबा फरीद की खिदमत में हाजिर थे बाबा फरीद ने शहादत हुसैन अलैहिस्सलाम का जिक्र फरमाते हुए कहा कि तुम्हें मालूम है इस अशरा में हुजूर ﷺ पे क्या गुजरी आपके फर्जन्दो को किस बेरहमी से शहीद किया गया उन बदबख्तो ने अल्लाह के प्यारों को पानी का एक कतरा तक न दिया कैसे संग दिल काफिर बे आकबत बे शआदत

और ना मेहरबान थे हालांकि उन्हें खूब मालूम था कि ये दीन व दुनिया के और आखिरत के बादशाह के फर्जंद है फिर भी उन्हें बड़ी बेरहमी से शहीद किया गया , उन्हें यह ख्याल ना आया कि कल कयामत के दिन हजरत ख्वाजा ए आलम ﷺ को क्या मुंह दिखाएंगे । शैखुल इस्लाम ने ये बात फरमायी और हाय हाय करते हुए जारो कतार रोने लगे और एक नारा मारकर बेहोश होकर गिर पड़े फिर होश में आए फिर गिर पड़े आखिरकार 5 मुहर्रम उल हराम 665 हिजरी में हाय हाय करते हुए इश्के हुसैन अलैहिस्सलाम में अपनी जान दे दी । (راحتہ القلوب صفہ ٥٧) आप ताजिया का हुक्म देते और ताजियादारी करते थे और आज तक आपके आस्ताने पर ताजियादारी होती है ।

हजरत सैयद अशरफ जहांगीर सिमनानी मखदूम किछौछा र०अ०

आशूरा मोहर्रम में रस्म अजादारी बर्ता करते थे लिबास फाखरा पहनते थे । ऐश व अशरत के सामानों को तर्क कर देते थे , रश्म ताज़ियत में मशगूल रहते ताज़ियादारी की इजाजत देते थे और आज तक मखदूम किछौछा के यहां ताजियादारी होती है

हजरत ख्वाजा बंदा नवाज गेसूदराज र०अ०

हजरत ख्वाजा बंदा नवाज गेसूदराज र०अ० भी मोहर्रम में गिर्या वजारी में मशरूफ रहते थे और ताज़ियत हुसैन का एहतमाम करते थे

। ख्वाजा बंदा नवाज गेसूदराज के यहां आज तक ताज़ियादारी होती है ।
(جوامع الکلم)

हजरत शैख मखदूम पांडवी र०अ०

10 दिन मोहर्रम की वह बराबर गिर्या किया करते थे और फरमाते हैं वह दिल भी अजीब है जो खानदाने रसूल ﷺ और जिगर गौशगान बतूल के मातम में आंसू बहाए और उनका गम न करें पस वह शक्स जो उस गम में नहीं रोता उसका दिल, दिल नहीं पत्थर है आप के आस्ताने पर आज तक ताजियादारी होती है।

हजरत सैयद अब्दुल रज्जाक बानवी र०अ०

हजरत सैयद अब्दुल रज्जाक बानवी र०अ० पर भी असूरा मोहर्रम का बड़ा असर था आप ताजियादारी को ऐन ताजियत व मोहब्बते हुसैन अलैहिस्सलाम मानते थे आप फरमाते है कि ताज़िया को कोई ये न समझे की ये महज कागज और पन्नी का बना हुआ है बल्कि अरवाह मुकद्दसा सोहदाए करबला की तवज्जों खास होती है ।
(کرامات رزاقیہ)

हजरत मौलाना शेख अब्दुल हक मोहद्दिस देहलवी र०अ०

शैख अहमद मज्द शीबानी र०अ० , हजरत इमाम मोहम्मद शीबानी र०अ० के शागिर्द और हजरत इमाम आज़म अबू हनीफा की औलाद अमजाद से हैं । ओलूम शरीयत व तरीकत में यक्ता ए जमाना थे । आप हजरत ख्वाजा हुसैन नागौरी कुदुसुल्लाह सिर्रहू अज़ीज के मुरीद थे । मनकूल है कि आप रोजाना आधी रात को ख्वाजा गरीब नवाज के रोजे पर आते तो रोजा ए मुबारक का दरवाजा खुद बा खुद खुल जाया करता था ।

आप खानदान ए रसूल ﷺ के साथ इंतेहाई मोहब्बत व अकीदत रखने में अपने पीरों मुर्शिद के तरीके पर थे ।अशराह आशूरा माहे मोहर्रम और रबी अल-अव्वल के पहले 12 दिनों में नए और अच्छे कपड़े न पहनते और उन दिनों रातों को जमीन पर ही सोते, मुकबिर सादात में एहतेकाफ करते हर रोज बकदरे इमकान हुज़ूर ﷺ की रूहे पाक और आपकी अहले बैत की मुकद्दस अरवाह को सवाब हदिया करने के लिए तआम में तौसीय करते थे । आशूरा के दिन नई कूजे शरबत से भरकर अपने सर पर रख कर सदात के घरों में जाते और उन यतीमो और फकीरों को पिलाते इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम की ताज़ियत में मसरूफ रहते और उन अययाम में इस तरह गिर्या करते गोया वाकिया कर्बला उनके सामने हो रहा है ।

(اخبار الاخیار صفہ ٣٩٦ تا ٤٠١)

हजरत मौलाना शाह अब्दुल अजीज मोहद्दिस देहलवी र०अ०

जो साहब तर्जुमा ए कुरआन भी है । एक फतवा में फरमाते है कि हजरत अली कर्रम-अल्लाह-उ वज़हहु और उनकी औलाद पाक को तमाम उम्मत पीरो मुर्शिद की तरह मानते हैं और तकवीनी अमूर को उन हजरात के साथ वाबिस्ता जानते हैं और फातिहा दरूद व सदकात और नजरो नियाज़ उनके नाम की हमेशा करते है ।
चुनांचे तमाम औलिया अल्लाह का यही हाल है शहादत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम पर रूहे मुबारक रिसालत माब ﷺ के निहायत रंजो गम पर अगर कोई शख्स खुश अल् हान सलाम पढ़ता हैं मार्शिया मशरूह पढ़ने का इतफाक होता है तो अक्सर हाजरीन मजलिस और उस फकीर को भी हालत रिक्कत व गिरया होती है । पस अगर ये सब कुछ जो जिक्र किया गया है फकीर के नजदीक जायेज ना होता तो फकीर हरगिज इस पर इकदाम न करता।
(فتاویٰ عزیز یہ جلد اول صفہ ۴۰۱) شام کربلا صفہ ۳۰۰

हजरत मौलाना शाह रफीउद्दीन मोहद्दिस देहलवी र०अ०

भी साहब तर्जुमा कुरआन भी है । एक फतवा में फरमाते हैं इनअकाद मजलिस जिक्रे इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम की मोहर्रम के महीने में और उसके सिवा सुनना सलाम और मर्शीया मशरुह और गिरया व बका हाल शोहदाए कर्बला जायेज़ और दुरुस्त है ।
(شام کربلا صفہ ۳۰۰)

हाजरा मौलाना सलामत अली खान देहलवी शागिर्द हजरत अब्दुल अजीज मोहद्दिस देहलवी

फरमाते हैं खुदा का शुक्र है कि ताज़ियादारी अशअरुल इस्लाम में से है और एक आलम बहुत ही वजहों से बहर व अंदोज होता है और उससे दीनी फायदे हासिल होते है ।
(تبصرۃ الایمان صفہ ۲۲۰)

मुफासिरे कुरान हजरत मौलाना अशरफ अली थानवी

उसने कहा कि मेरे यहां ताजिया बनता है फिर हम हिंदू काहे को होने लगे मैंने इसको ताजिया बनाने की इजाजत दे दी और मेरे इस इजाजत का माखज एक दूसरा वाक्या है कि अजमेर में हजरत मौलाना मोहम्मद याकूब साहब र०अ० ने अहले ताजिया की नसरत का हुक्म दिया है ।
(اضافات الیعمیہ مولانا اشرف علی تھانوی جلد ٤ صفحہ ١٨٤)

हजरत मौलाना ख्वाजा हसन निजामी

ताज़ियो,निशानों,जुलूस, और मजलिसों की मुखालफत किसी मुसलमान को ना करना चाहिए बल्कि तबलीगी हजरात को उनसब बातों के कायम रखने की कोशिश करना चाहिए क्योंकि उनमे इस्लाम की तबलीग पोशीदा हैं ।

हजरत मौलाना अब्दुल रहमान साहब अल मुतवफ्फी 1345 हिजरी

यकीनन कयामत तक ताजियादारी खत्म न होगी इसलिए कि इसका एहतमाम खुदा और रसूल ﷺ की जानिब से है किसी के बंद करने से ये बंद नही हो सकता ।

(انوار الرحمٰن التنویر الجنان صفہ ۳۵۹)

कुदवतुल मुहक्केकीन हजरत मौलाना हाफिज मोहम्मद फायेक साहब हनफी मरहूम

बाजों का ये कौल हैं कि ताजिया देखने से निकाह टूट जाता है अगर इस फतवा को मान लिया जाए तो हिंदुस्तान में जितने हैं सब हरामी हो जाते हैं इसलिए कि हिंदुस्तान में कोई ऐसा आदमी ना होगा जिसने ताजिया ना देखा होगा ।

(دافع الزام عنی جواز تعزیہ من الادتہ الشریعتہ ۱۳۳۳ھ)

हजरत मौलाना मोहम्मद नईमुल्लाह साहब कादरी गोरखपुरी मरहूम

हजारों आलीम,फाजिल गुजरे किसी ने इसको (ताजिया को) मना न किया और इसे बराबर अच्छा समझते आए पस जब हुआ जमाना वहाबियो का (1925) शियूअ पाया उनसे मजहब ने तो ठहराया उसको नाजायज़ और करार दिया इसको भुत और ये बयीद नही है उनसे क्योंकि रोजा ए रसूल ﷺ को बड़ा भुत खाना कहा ह । अब्दुल वहाब नजदी जिस से निकला है मजहब वहाबी ।

(ارشاد النعیم لدفع الیّم صفہ ۲۳)

हजरत मौलाना अब्दुल वाहिद फिरंगी महली र०अ०

उस जमाने के उलमाए सालेहीन ने ताजियादारी को शायरुल इस्लाम समझते हुए उसकी तरवीज व बका के लिए फतवा दिया है पस उस जमाने के उलमाए सालेहीन ने ताजियादारी करने के बारे में जो फतवा दिया है वह बिल्कुल सही और दुरुस्त है और ताजियादारी की तरवीज सवाब वह अजर अजीम का सबब है । मौलाना निजामुद्दीन , मौलाना अब्दुल अली मोहम्मद , व मौलवी मुजीदुद्दीन, मौलाना अनवारुल हक , मौलवी नूर उल हक और दूसरे और उलमाए फिरंगी महल व इतराफ हिन्द जब ताजिया को देखते थे तो ताजीम के लिए खड़े हो जाते थे और दोनों हाथ ताजिया की तरफ दराज करके निहायती खजुअ व वख्शुअ और इजजो इनकेसार के साथ फातेहा पढ़ते थे ।

(ارشاد النعیم لدفع الیّم صفہ ۲۳)

सुल्तान उल आरिफीन हजरत नेयाज बेनेयाज़ शाह आलम अहमद बरेलवी कुदुस सिर्रहुल अजीज

को पंजतन पाक और अहले बैत व इतेहार व आले रसूल ﷺ से बेइंतहा इश्क था इसलिए आप बिला खौफ लौमत दायेमुल अलल ऐलान हर उस चीज या रस्म को पसंद फरमाते जिसका ताल्लुक बुजुर्ग गाने मजकूर से इश्क व मोहब्बत में इजाफा या उनकी याद ताजा करने से हो ये आपकी फितरत व तबीअत का तकाजा भी था और उसमें इश्क ए पंजतन पाक की तबलीग व अशाअत की मस्लहत भी पोशीदा थी उस मामले में भी आपका मसलक एहकाम कुरआन और सुन्नते नबी ﷺ के ऐन मुताबिक था आप यौमे आशूरा को ताजिया की जियारत के गरज से बाद 2:00 बजे शब जरूर तशरीफ ले जाते थे और पांच – सात ताजियों की जियारत करके वापस आते आखिरी उम्र में जब चलने की कूवत न रही फालिज का असर भी हो गया ताजिया की जियारत के कसद से मअजूर थे हज़रत मस्तगरक बैठे थे कि सुरत नूरानी हजरत जनाब फातिमा सैय्यदा अलैहिस्सलाम की तशरीफ आवरी हुई फरमाया की मिया आज हमारे बच्चों की जियारत को नही उठेंगे हजरत पर रिक्क़त तारी हुई खुद्दाम को हुक्म हुआ हमको ले चलो , अर्ज किया हुज़ूर को चारपाई पर ले चले फरमाया नहीं पैदल ले चलो चुननचा दो खुद्दाम ने दोनों जानिब से बगलो में अपना कंधा दिया और हजरत ने 5 पांच ताजियों की जियारत से फुर्सत हासिल की आखिरी दम तक आपका यही हाल रहा । एक मर्तबा सूरत के रहने वाले एक आलिमे दीन हजरत बेनेयाज शाह नियाज के हमराह हुए । हमेशा की तरह हजरत की यह आदत थी कि ताजिये के तख्त को हाथ लगा कर अपने मुंह और कल्ब पर फेरते थे मगर इस मर्तबा हजरत ने ताजिया के तख्त को बोसा दिया उस पर मौलवी साहब के दिल में यह ख्याल गुजरा कि

हजरत ने ये क्या गजब किया हजरत उनके खतरये कल्बी पर आगाह होकर उन से एक ताजिया को देखने को कहा मौलवी साहब ने देखा कि ताजिए के दोनों जानिब हजरत इमाम हसन अलैहिस्सलाम और इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम तशरीफ़ रखते हैं एक लिबास सुर्ख और दूसरे सब्ज का है मौलवी साहब को ताब मुशाहिदा न हुआ गिर पड़े और उन पर बेहद रिक्कत तारी हुई यहां तक कि लोटने लगे हजरत वहा से दूसरे ताज़िए शरीफ की तरफ तशरीफ़ ले गए ।

(کرامات نظامیہ ۳۷مخزن الخزان صفہ ۲۳٦)

सरताज उल आरिफीन सैयद हाजी वारिस अली शाह आलम पनाह कूदस सिर्रहुल अज़ीज

का इरशाद है कि खबरदार ताजिया को कोई ये ना समझे कि खाली कागज पन्नी और बास के कच्छियो का ढांचा है मलहूज रहे की अरवाह कुदसिया सैयदुस शोहदा अलैहिस्सलाम जुमला शोहदा ए कर्बला इस तरफ मोतवज्जा होती है वारिस पाक आलम पनाह माहे मोहर्रम में ताजिया खानों में जाते थे , जब ताजियादार ताजियों को लेकर चले जाते थे तब हुजूर वारिस पाक हुजरा के अंदर तशरीफ़ लाते थे ताजियों को देखते वक्त चेहरा अनवर की अजीब हालत मुशाहिदा में आती थी और देर तक हुजूर अनवर आलम सकुत में रहते थे , अशराह मुहर्रम और चहल्लुम के रोज आस्ताने आली पर सबील रखी जाती थी अजजा मोहर्रम से आशूरा तक आप मर्सीए भी

सुनते थे और अहले बैत कराम की मोहब्बत सुजाअत व बहादुरी के तजकरे फरमाते थे ।

(مشکوٰۃ حقانیہ صفہ ۱۱۰ مطبوعہ کرلچی، مولی فضل حسن صدیقی وارثی)

सिराज उल सालेकिन हजरत मौलाना सूफी मोहम्मद इफ्तखारूल हक़ उर्फ बिस्मिल शाह कुमरीये हिन्द र०अ०

फरमाते हैं कि ताजिया हुसैन अलैहिस्सलाम बा तवज्जीहनियत ऐन ताज़ियत हुसैन है और ताज़ियत हुसैन फैल हसन व जायेजफीश्शरीअत_है क्योंकि इसमें हुसैन मुसममां इसमें सिफतुल्लाह वली हैं जिक्रुल्लाह के जुबान,खयाल दिल या रूह में जारी कर अदने का आलाए अजीम है और जो सै आला जिकरुल्लाह हो वह किसी कायदा शरअई के हरगिज़ हरगिज़ शर्रूल अमर नहीं वह मुहदिस नहीं और जो शैय मोहदिस नहीं वह बिद्दत नहीं और जो शैय बिद्दत नहीं वह जलालत नहीं और जो जलालत नहीं व यकीनन मुदखल जन्नत है ।

हजरत फरमाते हैं इस्लाम महज इल्म शरीयत ही का नाम नहीं बल्कि इस्लाम इल्मे शरीयत इल्में तरीकत इल्में हकीकत इल्मे मार्फत चारों को मोहीत है । फरमाने नबीये करीम ﷺ है

قال رسوللہ صلی اللہ علیہ وسلم ان الشرفتہ اقوالی والطریقتہ الفعالی ولحقیقتہ اس المال

तर्जुमा फरमाया हुज़ूर ﷺ ने शरियत मेरे अकवाल है तहकीक तरीकत मेरे अफआल है और तहकीक हकीकत मेरे अहवाल है और तहकीक मार्फत मेरा मकसूदे कुल्लुकुल है अगर इल्म शरीयत से फेल ताजिया साबित नही होता तो इल्म तरीकत के मसायेल में गौर करो अगर इसमें भी कामयाबी हासिल ना होती तो हकीकत की तरफ रूजुअ करो जो हकीकत से भी माफी उलजमीर हासिल ना होता तो मार्फत की सिमत तवज्जो मबजूल करो और जो मार्फत से भी फेल ताजिया समझ में ना आए तो समझो कि तुम्हारे कल्ब पर खुदा की मुहर लग चुकी है ।
((براہین قاطعہ جواز تعزیہ) صفہ ۹_۲۸_۳۱)

ختمل اللہُ علیٰ قلوبهم وعلیٰ ابصارهم غشلوة ولهم عزلبٌ عظیم
तर्जुमा अल्लाह ने उनके दिलो और उनके कानो पर मुहर लगा दी है और उनकी आंखो पर पर्दा पड़ गया है वह सख्त सजा के मुस्तहिक है
(سوره البقره آیت نمبر ۷)
कुरआन शरीफ के सूरह **(الاعراف آیت نمبر ۲۲)** का तर्जुमा (हमने जहन्नम के लिए बेहतरीन जिन और इंसान पैदा किए हैं उनके पास दिल है मगर उनसे सोचते समझते नहीं उसके पास आंख है मगर उनसे देखते नहीं और उनके पास कान है मगर उनसे सुनते नहीं वह जानवरों की तरह हैं बल्कि उनसे भी ज्यादा गए गुजरे हैं और यही लोग गफलत में हैं) ।
कुरआन शरीफ की सूरह **(الاعراف آیت نمبر ۹۱)** में अल्लाह पाक ऐलान है कि तर्जुमा (पस जो लोग नबी ﷺ पर ईमान लाए

और जिन्होंने उसकी मदद और हिमायत की और उस नूर का इत्तेबाअ किया जो उसके साथ उतरा है वही फलाह पाने वाल है) | कुफ्र और मुनाफिकत के खिलाफ लड़ना रसूल ﷺ मदद की करना है और पंजतन पाक और हजरत इमाम हुसैन की मोहब्बत ताज़िया और इतेबाए रसूल ﷺ की हिमायत करना है बलाशबहा पंजतन पाक नूरे मुस्तफा ﷺ है । हजरत इमाम अहमद रजा खान साहब बरेलवी र०अ० फरमाते हैं _

तेरी नस्ले पाक में है बच्चा बच्चा नूर का है
तू है ऐन नूर तेरा सब घराना नूर का

अहदे रिसालत में ही नूरे मोहम्मद ﷺ को बुझाने के लिए काफिरों और मुनाफिको की एक जमात सर गर्म अमल थी ।
10 रमजान 8 हिजरी मुताबिक 1 जनवरी 630 ईसवी को मक्का फतह हुआ और मुनाफिक की एक जमात जान के खौफ से बजाहिर मुस्लमान हुए लेकिन दरे पर्दा वह इस्लाम की बीख बुनी कई कोशिश करते रहे । यहां तक कि कुरआन पाक में अल्लाह के जानिब से सूरह मुनाफिकुन का नुजूल हुआ ।
जब मुनाफ़िको की मुनाफिकाना हरकत हद से सवा हो गई तब इमाम उल अंबिया ﷺ ने खुम के मुकाम पर 9 जी अल-हिज्जा 10 हिजरी मुताबिक 621 ईसवी 90 हजार मुसलमानों की मौजूदगी में ऐलान फरमाया **मन कुंतो मौला फ़-हो व अलीयुन मौला**
ऐ ईमान वालों सुन लो कि जिनका मैं मौला हूं हज़रत अली कर्रमल्लाहो वज्हू भी उनके मौला हैं जिस तरह मेरी अताअत तुम पर

फर्क की गई है इसी तरह अली की अताअत भी तुम पर फर्ज कर दी गई है । हुजूर ﷺ ने फरमाया मैं इल्म का शहर हूं और अली उसके दरवाजा लिहाजा जो इल्म , इल्मे शरियत , इल्मे तरीकत , इल्मे हकीकत, इल्मे मार्फत का इरादा करें वह दरवाजा अली पर आए । जाबिर बिन अब्दुल्लाह से मरवी है (ازلتہ الخلفاء صفہ ۵۰۹) इसके बाद आयतें कुरआनी का नुजूल हुआ _तर्जुमा मैने
तुम्हारे दीन को मुकम्मल कर दिया और तुम पर अपनी ये नेमत (अली) पूरी कर दी और तुम्हारे लिए दीन इस्लाम को पसंद किया । अल्लाह ने कुरआन ,नमाज , रोजा, हज , जकात और दुसरे फरायेज के साथ हज़रत अली कर्रमल्लाहो वज्हू और अहले बैत की अताअत और मोहब्बत भी लाज़िमी करार दिया क्योंकि कुरआन में है ।
(من يطع الرسول فقد اطاع الله)
तर्जुमा जिसने रसूल ﷺ की अताअत की तहकीक उसने खुदा की अताअत की।
कुरआन शरीफ (النساء ١١٠) में अताअत रसूल का हुक्म सैकड़ों जगह पर आया है इसलिए फरमाने रसूल करीम ﷺ है कि अली कर्रमल्लाहो वज्हू की अताअत तुम पर लाज़िम हैं तो ये आप उसे पसंद खुदा है । कुरआन पाक के किसी भी आयत का इंकार और ﷺ के किसी भी मुसतनद हदीस का इनकार करने वाला या तो काफिर है या मुनाफिक क्योंकि तिर्मीजी शरीफ, बुखारी शरीफ , निसाई शरीफ , मसनद शरीफ वगैरह में हदीस मोतवातिर है । हजरत अबू सईद बुखारी हजरत अबू जर मफ्फारी से हजरत सुलेमान फारसी से हजरत अनस बिन मालिक र०अ० ज़ैद बिन अरकम से और दीगर सहाबा एकराम रिज़वान उल्लाह अलैहिम अजमईन से कि हम लोग

मुनाफिकों को हज़रत अली कर्रमल्लाहो वज्हू के बुग्ज और अदावत से पहचान लिया करते थे क्योंकि अहमद इब्ने हनबल और हकिम ने मसनद सहीह हजरत उम्मेे सलमा र०अ० से रवायत की है आप फरमाती हैं कि हुजूर ﷺ ने फरमाया **जिसने अली को गाली दी उसने मुझ को गाली दी और जिसने मुझे गाली भी उसने खुदा को गाली दी**। मुनाफिको की निशानदेही और हजरत अली की फजीलत में बेशुमार फरमाने मुस्तफा ﷺ है , हजरत अली बिला-शुब्हा शम-ए-हिदायत है आप पंजतन पाक में शामिल है और नूर ए मोहम्मद ﷺ है क्योंकि बेदम शाह वारसी फरमाते हैं ।

बेदम यही तो पांच है मकसूदे कायनात ,खैरुन्निसा ,हुसैन व हसन मुस्तफा अली बे हुक्म अल्लाह अहले बैत की मोहब्बत मोअद्दत मुसलमानों पे फर्ज की गई है और पंजतन पाक के नूर का इत्तेबाअ करने वालों के लिए जन्नत की बशारत है।

खिलाफाते राशिदा के आखिरी दौर में तमाम असहाबे हक मुहाजिर और अंसार रिज़वान उल्लाह अलैहिम अजमईन हज़रत अली कर्रमल्लाहो वज्हू की खिदमत में अर्ज गुजार हुए की हम लोग आपके सिवा और किसी को खिलाफत का अहल नहीं समझते हमारी दरख्वास्त कबूल करें और हाथ बढ़ाइए तो हजरत अली ने फरमाया मस्जिद में चलो वही खुलेआम अपने अमीर का इंतखाब करो तमाम सहाबा रिज़वान उल्लाह अलैहिम अजमईन ने 35 हिजरी बा मुताबिक़ 656 ईसवी में हजरत अली के हाथों पर बैत की खानवादा ए मोहम्मदी से किसी फर्द का बैत लिया जाना था कि मुनाफिको के सीने पर सांप लौट गया और और खून उस्मान बिन अफान का बहाना बनाकर अमीरे शाम ने खिलाफत ए राशिदा से

बगावत का ऐलान कर दिया। 3 साल तक हजरत अली मुनाफिकों और बागियों की बगावत को कुचलते रहे आखिर शाबान 38 हिजरी में जंगे सिफ़्फ़ीन का खूँ रेज मार की हुआ हजरत अली के जानिब से 25 हजार इराकी काम आए जबकि मुआविया बिन अबु सुफ़ियान की जानिब से 45 हजार शामी कतल हुए आखिर में लैलतुल हरीर का फैसला कुन मारका कि पेश आया जब अमीरे शाम को यकीन हो गया कि शिकस्त यकीनी है तो नेजे पर कुरआन शरीफ़ उठाकर तहकीम की चाल चली, हजरत अली ने बेहतर समझाया की ये जंगी चाल है मगर सिपाही न माने और ये जंग बंद करनी पड़ी। उस जंग के बाद खार्जियो का जहूर हुआ, खर्जियों ने भी हजरत अली को काफी परेशान किया, मामला तहकीम के बाद हजरत अली की खिलाफते राशदा के खिलाफ अमीरे शाम ने अपनी खिलाफत के लिए बैत ली और बाजाब्ता ममलिकत इस्लामी दो हिस्सों में तकसीम हो गया (शिआने मुआविया को चाहने वाले बानू उमैया के तरफदार थे) और शिआने अली (हजरत अली के चाहने वाले) खानवादा ए रसूल के तरफदार थे।
(تاریخ اسلام صفء ١٧٧)

शाह वली अल्लाह मोहद्दीस देहलवी र०अ०

ने अपनी किताब **ازلتہ الخلفاء جلد صفہ٣٢٧** पे कई हदीस मुबरका नकल की है इब्ने माअज्जा बा रवायत है कि उमर बिन आस से की हुजूर ﷺ ने फरमाया - जब 2 खलीफा की बैत की जाए तो जो उनमें

पिछला है उसे कतल कर डालो और दूसरे हदीस उसी सफा पे है कि जब एक खलीफा की बात हो जाए तो फिर अगर कोई दूसरा शख्स झगड़े के लिए आए तो तुम लोग उस दूसरे की गर्दन मार दो इसी तरह कई हदीस मौजूद है सफहा 356 में है रसूल ﷺ ने फरमाया मैं तुमको सात फितनो से डराता हूं जो मेरे बाद होंगे। एक फितना मदीने से शुरू होगा , एक यमन से , एक शाम से , एक मशरीक से , एक मगरीब से और एक वसत शाम से जिसका नाम सुफियानी होगा , फितना शाम बनी उमय्या के सबब होगा सफहा 360 पे है की हुजूर ﷺ ने फरमाया मैं तुम्हें फितना अहलास से डराता हूं मुराद बनी उमय्या का फितना जो शाम से शुरू होगा , जंगे सिफ़्फ़ीन में हरजरत अम्मार बिन यासिर , हजरत अली के जानिब से लड़ते हुए शहीद हुए सफहा 356 में हैं । हुजूर ﷺ ने फरमाया ऐ अम्मार तुम्हे एक बागी गरोह कत्ल करेगी ये हदीस मोतवातिर है कई असनाद से साबित है ।

इन तमाम हदीसे मुबारक के फरमान ए रसूल ﷺ और तवारीख से साबित है कि अमीरे शाम वालिद याजिद मलऊन की हुकूमत मुनाफिक और बागी की हुकूमत थी और हुजूर ﷺ ने वालीद यजीद मलऊन को कत्ल का हुक्म दिया था और अमीरे शाम की हुकूमत और बादशाहियत को सुफयानी बनी उमय्या का फितना करार दिया । सफहा 330 में हजूर ﷺ ने फरमाया मेरी उम्मत को बानू उमय्या के बादशाहो के हाथों तकलीफ पहुंचेगी आखिरकार गरोह मुनाफिकीन का एक मुनाफिक इब्ने मलजम ने 18 रमजान 40 हिजरी को फज्र की नमाज के वक्त जब हज़रत अली कर्रमल्लाहो वज्हू मस्जिद में थे जहर आलुद खंजर से वार किया , हालते जख्म में लोगों ने हजरत अली से कहा कि आप अपने बेटे को उनका खलीफा बना दीजिए

लेकिन आपने इनकार कर दिया और लोगों की राय पे उस बात को छोड़ दिया और आप 20 रमजान 40 हिजरी को शहीद हो गए ,आपकी शहादत के बाद हजरत इमाम हसन अलैहिस्सलाम खलीफा हुए लेकिन वालिद यदीज मलऊन ने उन्हें भी चैन से ना रहने दिया और आप चंद शरायत के साथ मुआविया बिन अबू सूफियान वालिद यजीद मलऊन के लिए तख्ते खिलाफत को छोड़ दिया लेकिन अफसोस अमीरे शाम ने हजरत इमाम हसन अलैहिस्सलाम से भी दगाबाजी की , इमाम हसन ने अमीर मुआविया से जो अमूर तलब किए थे वह ये थे कुफे के खजाने की तमाम रकम फारिस का खराज उन्हें दिया जाए और हज़रत अली कर्रमल्लाहो वज्हूको सबे सितम ना किया जाए अमीरे शाम वालिद यजीद मलऊन ने सबे सितम (गाली गलोज) से बाज रहने को मंजूर किया लेकिन बाद में ये शर्त भी पूरी न की और दूर बनू उमय्या के 90 वर्षों तक हज़रत अली कर्रमल्लाहो वज्हू और अहले बैत अतहार अलैहिस्सलाम पे गाली ग्लोज का सिलसिला जारी रहा यहां तक कि उन्ही के खानदान के एक नेक सिफत खलीफा उमर बिन अब्दुल अजीज ने ये सिलसिला बंद किया

(کامل ابن اثیر صفہ۲ تاریخ طبری صفہ٤)

हुजूर ﷺ ने बारहा फरमाया जिसने अली को बुरा कहा उसने मुझे बुरा कहा जिसने अली को गाली दी उसने मुझे गाली दी जिसने अली से बुग्ज किया उसने मुझसे बुग्ज किया आप ने फरमाया मैं तमाम बनी आदम का सरदार हूँ और अली सैयदुल अरब हैं (**ازلتہ الخلفاء صفہ۵۰۹**) तख्ते खिलाफत से किनारा कश होकर हजरत इमाम हसन गोशा नशीन हो गए लेकिन बनू उमय्या के बग्ज ने उन्हें वहां भी चैन से जीने न दिया चुनांचा महीने भी ना गुजरे थे कि उन्हें ज़हर

पिलाकर शहीद कर दिया। अब हिंदा के बेटे का सितारा बुलंदी पर था , अबू सुफियान के दिल में मक्का का बादशाह बनने की जो तमन्ना थी वह उसके बेटे अमीर मआविया ने उससे भी शानदार पैमाने पर पूरी कर दी। पैगंबर इस्लाम के दो सबसे बड़े दुश्मनों का बेटा यूँ मसनदे खिलाफत पर मुत्मकिन हुआ , तकदीर की इससे बड़ी बुल अजबी दुनिया की तारीख में दर्ज़ नहीं है। अमीर मुआविया के बरसरे एक्तदार आते ही जमाना जहालत के अदीदी निजाम ने इस्लाम के जमहूरी निजाम हुकूमत की जगह ले ली। बेदीनी अपनी तमाम बुराइयां लेकर औद कर आई अमुवी हाकिम और सिपाही जहां कहीं जाते फिसक व फजूर को अपने जलो में ले जाते थे। हजाज और इराक गासिब के पंजे में कराह रहा था लेकिन उसने (मुआविया) ने इस्लाम का टेंटुआ ऐसी मजबूती से दबा कर रखा था कि इसका छुड़ाना आसान न था।

जो जर व माल वह बेदर्दी के साथ रेआया से वसूल करता था वह सब अपने भाड़े के सिपाहियों पर खर्च करता चुनांचा सिपाही शिकायात का गला घोट देते थे अपनी वफात से पहले अमीर माविया ने फ़ौज के अमायेदिन को जमा किया और उन से अपने बेटे यजीद के हक में हल्फ वफादारी उठवाया जिसे उन्होंने जानशीन नामजद किया। ये था ले देकर यजीद का हक मनसब खिलाफत पर

(اسپرٹ آف اسلام صفہ ٤٥٦)آنریبل سید امیر علی

अमीर माफिया ने अपने बेटे यजीद की वली अहदी के लिए नामवर सहाबा एकराम रिज़वान उल्लाह तआला अलैहिम अजमईन और ताबईन को मक्का बुलवाया और यजीद की बैत का हुक्म दिया लेकिन सहाबा एकराम ने उनकी बात न सुनी तो अमीरे शाम ने हर

सहाबी की गर्दन पर एक एक सिपाही को खड़ा किया और हुक्म दिया कि उनकी उनमें से कोई मेरी बात को काटे तो फौरन उसका सर कलम कर दो और बजोर तलवार यजीद की वली अहदी का ऐलान कर दिया, कुछ लोगों को इनाम व इकराम का लालच देकर और कुछ को डरा धमका कर यजीद की बैत करने पे मजबूर किया

(ابن لاثیر جلد۳ صفحہ ۲۵۲_ طبری جلد۲ صفحہ ۱۰۸)

और तमाम तवारीखे इस्लाम में यह वाक्य दर्ज है इसके बाद अमीरे शाम के हुक्म से बनू उमय्या के जालिमों ने खानवादा ए रसूल के अफराद को चुन चुन कर कत्ल करना शुरू कर दिया। अफराद अहले बैत बनी उमय्या के दुश्मनी उसी पर खत्म ना हुई बल्कि उन्होंने हर जुमा को मस्जिदो और मस्जिद-ए-नबवी के मेम्बर पे चढ़कर आले रसूल और हज़रत अली कर्रमल्लाहो वज्हू पर लानत और गालियों का सिलसिला जारी किया और हजरत हसन और खानवादा ए मोहम्मदी ﷺ के लोग बैठे सुना करते थे।

एक जुम्मा की नमाज के मौके पर अमीर मुआविया, हज़रत अली कर्रमल्लाहो वज्हू पे सबो शितम (गाली गलौज) कर रहे थे हुजूर ﷺ के एक बुजुर्ग सहाबी हजरत हज्र इब्न अदी अल-किंदी र०अ० और उनके असहाब से ये बर्दाश्त ना हुआ, उन्होंने हुजूर ﷺ और हजरत अली की तारीफ व तौसीफ करनी शुरू कर दी बस इसी कसूर की पादाश में अमीरे शाम के हुक्म से हजरत हज्र इब्न अदी और उनके असहाब को गिरफ्तार कर लिया गया, अमीर मुआविया ने तमाम कैदियों को हुक्म दिया कि अली से बराअत जाहिर करो और उन पर लानत करो वरना तुम्हें कत्ल कर दिया जाएगा उन हजरात ने कहा खुदा की कसम अगर मैं कत्ल से घबरा भी जाऊं तो भी कोई कलमा

ऐसा निकालू जो खुदा की नाराजगी का बाअस हो , इस पर मआविया ने छह सहाबा इकराम को कत्ल कर दिया और सातवें को जिंदा जमीन में दफन कर दिया , मकतूलीन हजरत हज्र इब्ने अदी र०अ०, शरीक इब्ने शदादुल हजमी, सैंडी इब्ने फैसल , अलशीबानी , कबीसतुल असबी, महरज इब्ने शहाबा अलसादी असीमी, कराम इब्ने हयान अल अतरी और अलुई हयाम इब्ने हस्सान अलग़ज़ी थे। मोअख्खिरू जिक्र को मुआविया के हुक्म से जियाद ने जिंदा दफन कर दिया।

(ابن اثیر صفہ ۸۲ تا ۸٤_ طبری صفہ ۱۰٤ تا ۱۰۷)

हजरत ख्वाजा हसन बसरी र०अ०

को हजरत हज्र इब्न अदी र०अ० और उनके असहाब के कत्ल होने की खबर मिली तो उन्होंने कहा कि नमाजे जनाजा पढ़ो , कफन दफन करो , उनका मुंह की किबला के जानिब करो और खुदा की कसम उन कब्रों की जियारत करो । हजरत ख्वाजा हसन बसरी का कौल है कि मआविया में 4 खसलते ऐसी थी कि अगर एक ही होती तो बायिसे हलाकत होती।

1– उसका उम्मत में तलवार लेकर निकलना और अमरे उम्मत पर काबू कर लेना ।

2 – उनका अपने बाद अपने हद दर्जा के नशाबाज शराबी और बर्कमास बेटे यजीद मलऊन का खलीफा बनाना ।

3– उन काजियाद से अल्हाक नशब करना ।

4 –हजरत हज्र इब्न अदी और उनके साथियों को कत्ल करना
वावेला है हज्र और असहाब हज्र के लिए
(ابن اثیر جلد۳ صفہ ۸ تا ۸۸)
इब्ने सिरीन कहते है की हमने सुना है कि जब मुआविया की मौत का वक्त करीब आया तो वह बार-बार यही कहते थे कि ऐ हज्र इब्न अदी आज का दिन तेरी वजह से इतना लंबा हो गया ।
दमिशक में 1 रजब 60 हिजरी को मुआविया का मर्ज मौत शुरू हो गया तो उन्होंने अपने बेटे को बुलाकर कहा कि बेटा मैंने तुम्हारे लिए हुकूमत और हुक्मरानी का पूरा बंदोबस्त कर दिया है , मुश्किल अमूर को तुम्हारे पैरों के नीचे रौनदवा दिया है , दुश्मनों को जलील कर दिया है और अरबों की गर्दनों को तुम्हारे लिए रौंदवा दिया है और इस कदर माल व मताअ जमा किया है कि कभी किसी ने इतना जमा न किया होगा।
(ابن اثیر صفہ ۱۲۲ اطبری صفہ ۱٤٤)

मुआविया बिन अबू सुफियान की मौत

के बाद यजीद मलऊन तख्त बनू उमय्या का बादशाह हुआ , यजीद ने बजोर ताकत हजरत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम से बैत करानी चाही लेकिन मुकम्मल कुफ्र के आगे मुकम्मल नूर झुकने को तैयार ना हुआ और इसी मोरूवशी मलूकियत और कुफ्र से बैत की इनकार की पादाश में 3 मोहर्रम से 10 मोहर्रम 61 हिजरी मुताबिक 30 अक्टूबर से 7 नवंबर 681 ईसवी तक इमाम हुसैन आली मकाम और खानवादा ए मोहम्मदी ﷺ के पाक नौनिहालों का कत्ल और मासूम

शहजादीये रसूल ﷺ के सरो से चादर उतारने वाले और उन्ही पाँव व हाथ में बेड़ियां डाल कर कूफे और दमिश्क की गलियों में घसीटने वाले यही यजीदी मुसलमान थे ।
याजिदियो ने 22 हजार के लश्कर में 700 सात सौ हाफिज ए कुरान भी थे । अजान, नमाज, तिलावते कुरआन इधर भी थे उधर भी थे लेकिन हाय कैसे हाफिज ए कुरआन थे की कुरान ए नातिक को कतल कर रहे थे । कलमा मोहम्मदी पढ़ कर मुस्लमान हुए और मोहम्मद ﷺ के नवासे को ही कतल कर रहे थे । 1 लाख 24 हजार पैगंबर दुनिया में तशरीफ लाएं लेकिन किसी नबी की उम्मत ने अपने नबी की आल पर ऐसा जुल्म ना ढाया होगा और ना तारीख तहजीब आलम में कभी ऐसा वाकया गुजरा है और ना गुजरेगा।

इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम की आखिरी अल्फ़ाज़

जब कर्बला में अम्वि यजीदी लश्कर ने इमाम हुसैन को चारों तरफ से घेर लिया तो आपने उन मुनाफिक मुसलमानों को मुखातिब करते हुए फरमाया लोगों ! मेरे हसब व नसब को याद करो सोचो कि मैं कौन हूं फिर अपने गिरेबान में मुंह डालो और जमीर का महासबा करो और खूब गौर करो क्या तुम्हारे लिए मेरा कत्ल करना और मेरी हुरमत का रिश्ता तोड़ना गवारा है ? लेकिन जिन मुनाफिकों को नबी ﷺ के हुर्मत का पास नहीं जिन्हे हज़रत अली कर्रमल्लाहो वज्हू से बुग्ज़ व अदावत हो , जिन्हें खुदा के फरमान से कोई सरोकार नहीं उन्हें सरकार इमाम हुसैन अली सलाम से क्या मोहब्बत व हमदर्दी हो

सकती है लेकिन जिन्होंने रोजे कयामत का खौफ है जिन्हें हुज़ूर ﷺ से शफाअत की उम्मीद है जिन्हें अहले बैत नबी ﷺ से प्यार है वह कल भी अपनी जान खानवादाये नबी ﷺ पे कुर्बान किए और उनकी नस्ल आज भी या हुसैन या हुसैन कहते हुए आंखें आसुओ से वजू करती है क्योंकि उन्हें मालूम है कि आखिरात का सहारा हुसैन है । लिहाजा सूफियाये इस्लाम ने इसी इश्के नबी और इश्के अहले बैत की तालीम देकर दिन ए मोहम्मदी को फैलाया ।

मदीना मनव्वारा की पामाली

वाकयात कर्बला के बाद अम्वी हुकूमत के खिलाफ अहले मदीना ने बगावत कर दी । 63 हिजरी मुताबिक 683 ईसवी में जंगहेरा वाकया हुआ , यजीद बिन मुआविया ने मुस्लिम बिन उकबा मलउन की सरकरदगी में 12 हजार लश्कर जरार अहले मदीना को सबक सिखाने के लिए रवाना किया , मदीना फतह हुआ , यजीद बिन मुआविया के लश्कर ने 3 दिनों तक शहर के बाशिंदों का कत्लेआम किया , आशिके अहले बैत को अरे चुन-चुन कर कत्ल किया गया । इमाम जहरी की रवायत के मुताबिक 17 सौ सहाबा इकराम , ताबयीन तब्बा ताबयीन साबरी तपा ताबीन और 10 हजार आवाम को कत्ल किया गया और गजब ये की अम्वी दरिंदों ने घरों में घुस-घुस कर बेदरीज कुंवारी लड़कियों की अजमत दरी की जिसकी वजह से अहले मदीना की 2 हजार से भी ज्यादा लड़कियां जीना से हमला हुई ,मस्जिद-ए-नबवी और रोजा ए रसूल के अंदर घोड़े बांधे गए , हुर्मत मदीना को पामाल किया गया ।

ابن الاثیر جلد۳ صفہ ۳۰۱ تا ۳۱۳ طری جلد ۳ صفہ ۱۷ تاریخ اسلام صفہ ۱۹٤_تاریخ سیرین_تاریخ ابو الفداء اور دیگر تواریخ اسلام مین واقعہ محفوظ ہے

काबा शरीफ पर हमला

26 मुहर्रम 64 हिजरी में यजीद बिन माविया ने हसीन बिन नमीर मलउन की कयादत में एक उम्वी लश्कर जरार के साथ मक्का मौअज्जमा पर हमला हमलावर हुआ, अब्दुल्लाह बिन जुबैर ने उअअम्वी लश्कर का मुकाबला किया लेकिन यजीदी लश्करियो ने हरम ए काबा का भी अहतराम ना किया और खाने काबा पर आग और पत्थरों की बारिश कर दी जिसकी वजह से काबा शरीफ का दीवार टूट कर गिर गया काबा की छत जलकर राख हो गई गिलाफ ए काबा जला दिया गया आखिरकार अब्दुल्लाह बिन जुबैर की गर्दन काटकर उसकी बीवी की गोद में डाल दिया गया और जिस्म को सूली पर लटका दिया गया कि लोग इबरत हासिल करें और बनी उमम्या के खिलाफ जुबान ना खोले।

(ابن اثیر جلد۳ صفہ ۲۱٦ طبریج٤ صفہ ۳۸۳ البداوا نہایہ جلد۸ صفہ ۲۲٥) تہزیب التہزیب جلد۱۱ صفہ ۳٦۱_ اور دیگر تواریخ اسلام میں یہ واقعہ محفوظ ہے)

दिन ए मोहम्मदी और सूफिया ए इस्लाम

असहाबे सुफ्फा रिजवानुल्लाह ताला अजमयीन के बाद और बनी उमय्या तहरीक का कयाम दोबारा अमल में आया , सूफिया ए इस्लाम इस जालिम और मौरूसी मलूकियत के खिलाफ सफ आरा हुए लेकिन मरवान बिन हूक्म अब्दुल्लाह बिन जीयाद , मुस्लिम बिन उकबा उर हिजाज बिन यूसूफ मलउन जैसे जालिमों के सामने ठहर ना पाए और सर जमीन अरब से निकलकर मुख्तलिफ मुल्कों में मुंतशिर हो गये उन्ही सूफियों ने पूरी दुनिया में दीन ए मोहम्मदी को फैलाया और आज जो पूरी दुनिया में हुसैनी , सुन्नी, हनफी और साफयी मुसलमान नजर आ रहे हैं उन्ही सूफिया की बदौलत है । एजादारी और ताजियादारी के बानी यही सुफिया थे । और उस का माखज़ सुफिया और उसकी नस्लों के सीने थे जहां एजादारी इमाम हसन हुसैन अलैहिस्सलाम की रसूमात महफूज थी । जो नस्ल दर नस्ल एक के बाद दूसरे को मुतकिल होती रही । अजीब सानेहा है कि जिस इस्लामी सियासी निजाम की बुनियाद नबी ए करीम ﷺ ने डाली थी और जिसकी पैरवी मोमिनो ने की वह तो 61 हिजरी में खत्म हो गया लेकिन जिस मौरुशी मलुकियत की बुनियाद मुआविया बिन अबू सूफियान ने डाली वह आज तक मुस्लिम ममालिक में कायम है ।

(راہ اسلام صفحہ ۸۱)

वाकयात कर्बला

वाक्यात कर्बला के तकरीबन 1150 साल बाद इब्न तैमिया का एक गैर मुकल्लिद आलिम पैदा हुआ, उसने बानू उमय्या और उसके बातिल असूलो की भरपूर वकालत की इब्ने तेमिया की हयात में तो किसी ने उसकी बातों को ना सुना लेकिन 18 वीं सदी ई० में शेख अब्दुल वहाब नजदी ने इब्ने तैमिया की किताबों से भरपूर इस्तफादा किया और वह उस कदर मुतासिर हुआ कि गलत और शिद्दत पसंदी में इब्न तैमिया से भी कई हाथ आगे निकल गया।
शाह सऊद के साथ मिलकर इसने वही सब कुछ किया जो अबू सुफियानी ने खानदान की फितरत थी फरमाने खुदा वंदी और सुन्नत ए मोहम्मदी को ठुकरा कर खानवादा ए रसूल के साथ फिर वही कतल और गारतगरी शुरू कर दी गईं , ,पहली जंगे अजीम 1914 से 1918 ई० और दूसरी जंगे अजीम 1938 से 1945 ईसवी के बाद तुर्क सलातीन कमजोर हो गए, खिलाफत ए उस्मानिया तुर्क किया इस्लामी मरकज खत्म हो गई। काबा और मदीना मदीना शरीफ की वजह कर सऊदी अरब को आलिमे इस्लामी मरकज का मुकाम हासिल हो गया । अब कौन था जो अब्दुल वहाब नजदी के वहाबी और असुलो की मुखालफत करता फिर वही बनी उमय्या की मुनाफिकाना सियासी सामाजी और मजहबी असूलों को आलमें

इस्लाम में फैला दिया गया । इश्के मोहम्मदी को बगावत कहा गया , रौजा ए रसूल को बड़ा बूत खाना कहा गया, एजादारी और ताजियादारी को बूत परस्ती कहा गया , जन्नतुल बकी पे बुलडोजर चलाए गए । सहाबा इकराम और शोहदाए ओहद और उम्महातुल मोमेनिन र०अ० कई कब्रों को हरम की तौसीह के नाम पर पामाल किया गया एक मजबूत सियासी कुवत मगरिबी ममालिक की मंजूर नजर हकुमत और कुदरती तेल के दौलत के जोम में अब्दुल वहाब नजदी की खुद साखता मजहब (वहाबी) की भरपूर तबलीग व अशाअत होती ।

(تاریخ نجد و حجاج)

एजादारी और ताजियादारी

13 सौ साल तक शिर्क व विदअत का कोई फतवा न था और यादें हुसैन मनाना बाइसे अजरो सवाब समझा जाता था लेकिन सिर्फ एक सदी में जब वहाबी मजहब ने जोर पकड़ा तो ताजियादारी को शिर्क व बिद्दत करार दिया जब की दुनिया ए तरीकत के तमाम खानकाओं और सिलसिलो में ताजियादारी को ऐन अकीदत और मोहब्बत हुसैन माना जाता है और यही वजह है कि तमाम सलासिल के सुफियाए कराम यादें हुसैन मनाना अपने लिए बाइसे अजरो सवाब समझते हैं और यही वजह है कि ख्वाजा गरीब नवाज के रौजा ए ख्वाजा अजमेर शरीफ , वारिस पाक के रौजा देवा शरीफ , रोजा शाहबाज कलंदर भागलपुर , रौजा शाह नियाज़ बेनियाज़ बरेली

शरीफ , रौजा मखदूम शाह जहानिया जहागिस्त, मखदूम किछौछा शरीफ, रौजा ख्वाजा फखरुद्दीन चिश्ती सलवार शरीफ , ख्वाजा बंदा नवाज गैसोदराज , रौजा बाबा फरीद गंज शकर , रौजा मखदूम शाह यहिया बिहारी मनेरी और हिंदुस्तान और एतेराफ आलिम में हजारों वलियों के दरबार में ताजियादारी होती है । सदियों से लेकर आज तक हिंदुस्तान ,पाकिस्तान , अफगानिस्तान , इराक , मिस्र , कुवैत , सिक्याँग चीनी , तुरकिस्तान, ताशकंद (रूस) , डरबन (जर्मनी) , साउथ अफ्रीका के अलावा मजमुआ, अल जजायर, रंजबार, मेजगास्कर , लक्षदीप ,मालद्वीप , मोरीशश ,अंडमान निकोबार वगैरह में ताजियादारी होती है ,अरब के खलीजी रियासतों में जैसे बहरैन मस्कत ओमान वगैरह में ताजियादारी होती है ।

अरब ही नहीं बल्कि दुनिया के तमाम खित्तो में यादें हुसैन मनाया जाता है गो कहीं कहीं तरीके में फर्क हो सकता है सिर्फ सऊदी अरबिया और कतर स्टेट जहां वहाबी हुकूमत कायम है ताजियादारी को बजोर शाही ताकत रोकते हैं , अगर ताजियादारी शिर्क व विदअत होती तो हमारे वली अल्लाह कभी ताजियादारी नहीं करते क्योंकि अल्लाह के वली शिर्क व विदअत का हुक्म नहीं देते बल्कि दुनिया के इंसानो को हजरत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम से इश्क व मोहब्बत का दर्स देते हैं ममलेकत सऊदी अरबिया (वहाबी) से हमें सबक लेने की जरूरत नहीं क्योंकि वह तमाम बुराइयां जो इमाम उल नबीया ﷺ ने खत्म कर दिया था आज उसी अरब में रिवाज पा चूका है । मजहबे इस्लाम में मलुकियत और बादशहियत की कोई गुंजाइश नहीं

क्योंकि इस्लामी निजामी कानून जम्हूरियत के बजाय बादशाहियत का सिक्का चलता है ।
हिंदुस्तान में ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती ने पहले अजमेर शरीफ को अपना मरकज़ बनाया फिर चिश्तिया सिलसिला के बुजुर्गों ने शुमाली मशरिकी और जुनूबी हिंदुस्तान में इस्लाम की तबलीग की उन चिश्ती सुफिया ने गावों और कसबात में तबलीग का काम किया हिंदुओं के दरमियान रहकर तबलीग करना आसान न था इसलिए उन्होंने खानकाह के दरवाजे हिंदुओ के लिए खोल दिए , सुफिया के इसी तबलीग मिशन ने हिंदुओ को काफी मुतासीर किया क्योंकि नीची जात के हिंदु मंदिरों में नहीं जा सकते थे लेकिन इमामबाड़ा में होने वाले अजादारी हुसैन में शिरकत करने लगे । आहिस्ता -आहिस्ता ताजियादारी और अजादारी हुसैन उनकी जिंदगी का हिस्सा बन गई इसके लिए तबदीली मजहब की कोई शर्त ना थी मुस्लामन तो रसूल के पैरू थे । और मोहब्बत अहले बैत को अज्रेरेसालत समझ कर अजादारी और ताजियादारी में शामिल होते थे
लेकिन हिंदू अपने धर्म पे कायम रहते हुए हुसैन के गुलाम बन गए और धीरे-धीरे इस्लाम कबूल करने लगे ।
ये उन सुफियाए की करामत ही कही जा सकती है और हिंदुस्तान में दीन ए मोहम्मदी की तबलीग व तरक्की हजरत इमाम हुसैन का ही सदका है । आज हिंदुस्तान में हुसैन की अजादारी और ताज़ियादारी ना होती तो सूफिया ए इस्लाम हिंदुओं के बीच इस्लाम को फैलाने में इस कदर कामयाब न होते ।
नबी ए करीम ﷺ ने फरमाया **हुसैन मिन्नी अना मिनल हुसैन** तर्जुमा हुसैन मुझसे है और मैं हुसैन से हूं , यानी इशाअते दीन की जिम्मेदारी

मेरी है और मुहाफिज दीन हुसैन हैं और हजरत ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती फरमाते **हक़्क़ा के बिना, लाइलाह अस्त हुसैन** तर्जुमा हक तो ये है कहा **ला इलाहा इल्लल्लाह** की बुनियाद हुसैन है लिहाजा हम सुन्नी हनफी हुसैनी मुसलमान हजरत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम की ताज़ियत के लिए अल्लाह के हुक्म के मुताबिक अहले बैत से मोहब्बत का इजहार करने के लिए ताज़िया को अपने कांधो पर उठाकर हुसैन से अपनी मोहब्बत का इजहार करते हैं। आज दुनिया के 90 फीसद मुसलमान सुन्नी हनफी हुसैनी हैं इमाम आजम, हजरत अबू हनीफा के नजदीक ऐसे लोग जो आले रसूल ﷺ और हज़रत अली कर्रमल्लाहो वज्हू से दुश्मनी की है वह बागी है, और हाफिज शिराजी ने फरमाया जो शख्स हज़रत अली कर्रमल्लाहो वज्हू और अहले बैत का दोस्त नहीं वह काफिँर है गवाह, वह कोई आलीम ए दीन हो या जाहिद हो, शैख हो या पीरे तरीकत हो।

आँ रा कि दोस्ती अली नेस्त काफिर अस्त,
गो जाहिदे जमाना या शेख राहे बास

यादें हुसैन अलैहिस्सलाम को ताज़ियादारान इबादत का एक रुक मानते हैं

ताजियादारान मोहर्रम में यजीदी जुल्मों सितम के कूफी दस्तानों को इस लिए दोहराते हैं कि हक व बातिल की तमीज हो जाए कि कौन-

कौन महिब्बाने रसूल व आले रसूल व अतहार हैं और कौन-कौन दुश्मनाने रसूल व आले रसूल है ।
ताजियादारी हजरत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम की याद आवरी है । शायरुल्लाह हैं और बेशक हुसैन और ताजिया हुसैन पाक अल्लाह की निशानी है और कुरआन पाक में हैं ।
ومن يعظمہ شعا ٔر اللة انـها من تقول القلوب
तर्जुमा जो अल्लाह की निशानियां की ताजीम करें तो ये दिलों के तकवे की निशानी है यही वजह है कि अल्लाह ने नेक बंदे जिनके कुलूब तकवे से पुरे हैं , ताज़िया को देखकर ताजिम के लिए खड़े हो जाते जाया करते हैं और दुनिया के तमाम वली अल्लाह ताज़िया की ताजीम का हुक्म देते हैं और साबेका औलिया ए अल्लाह का यही तरीका रहा है क्योंकि ताज़िया को देखकर हजरत हुसैन अलैहिस्सलाम की याद आती है और हजरत इमाम हुसैन की याद आते ही ताजीम लाज़िम हो जाती है और जो लोग इसे खुराफात , शिर्क व विदअत समझते हैं वह दरअसल हजरत इमाम हुसैन की ताजीम ही नहीं करते और जो लोग हुसैन की ताजीम नहीं करते और अपने आप को मुसलमान भी कहते हैं वह या तो सिर्फ 100 साल पुरानी मजहब वहाबी से ताल्लुक रखते हैं या फिर वह मुनाफिक हैं क्योंकि हजरत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम का एहतराम व मोहब्बत तमाम मुसलमानों के फर्ज है और ये नबी ए करीम ﷺ की सुन्नत है । अहले बैत से मोहब्बत मुअद्दत करना अल्लाह का हुक्म है और यही दिन ए मोहम्मदी ﷺ का हुक है।
अलबत्ता दिन वहाबियत वाले इसके मुनकर हैं , अल्लाह से हम ताजियादारी हुसैनीयो की ये दुआ है की यह हम लोगों का हशर

हजरत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम के साथ हो और जो मुनकर हैं उनका हशर उनके आकाओं के साथ हो, कुरआन पाक में अल्लाह ने दोबारा फरमाया , ان اصفاء والمومنين شاءر الله

तर्जुमा बेशक सफा व मरवा शायरुल्लाह है, अल्लाह की निशानी है सफा व मरवा हजरत हाजरा की , पानी के लिए दौड़-धूप करने की यादगार है। मुकामे इब्राहिम हजरत इब्राहिम अलैहिस्सलाम की यादगार है चूँकी आपने इस पत्थर पर खड़े होकर काबा की तामीर की थी वहां पर दो रिकाआत नमाज अदा किए बगैर हज़ पूरा नही हो सकता। हर हाजी पर लाजिम है कि हज्रे असवद को बोसा दें उस काले पत्थर को बोसा न दिया जाए तो तमाम दुनिया के अलीमो का इस पर इत्तेफाक है कि हज नहीं होगा ।

मुकामें अरफात हजरत आदम अलैहिस्सलाम और हव्वा अलैहिस्सलाम की मुलाकात की जगह की यादगार है । गारे हेरा हुज़ूर ﷺ की चिल्ला कशी की यादगार है , इसी तरह ताज़िया भी बना जो हजरत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम की याद आवरी है । ताजियादार लोग ताजिया को शायरुल्लाह समझते हैं और उनकी ताजीम करते हैं शायरुल्लाह (**अल्लाह की निशानी**) से वह अश्या मुराद है जो अल्लाह या अल्लाह के नबी या इमाम या कुरआन के साथ मनसूब हो जाए ।

मसलन मस्जिदे , कुरआन , संगे अस्वद , फातिहा सालेह , मिम्बर रसूल अल्लाह , तबरुकात अंबिया मिसल,अमामा,असा ,नालैन रसूल अल्लाह ﷺ , पैरहन मुबारक वगैरह हर साल हज़ के मौके पर हाजी व मिसरी दो महमिलें हजरत आयशा की बनाकर बड़े

तुज्क व एहतशाम के धूमधाम के साथ उलमाए मशायेख अपने कंधे पर उठाकर लाते हैं ताकि हजरत आयशा की याद आ जाए ।
6 दिसंबर 1992 ई० को बाबरी मस्जिद शहीद किया गया और हर साल 6 दिसंबर को हिंदुस्तान के तमाम मुसलमान बाबरी मस्जिद की शहादत पर यौमे स्याह मनाते हैं ईंट पत्थर की बनी हुई मस्जिद के शहीद होने पे मस्जिद की शहादत मनाते हैं तो हज़रत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम की यौमे शहादत मनाना क्यों जरूरी नहीं वह हुसैन ही तो है जिन्होंने सर देकर दुनिया की तमाम मस्जिदों को वीरान होने से बचा लिया । ताज़िया तमाम उलमाए व सालेहीन सलफ व औलिया ए करामव मसायेख एजाम की निगाह में मुस्तहसन है ।
कातिलान इमाम हुसैन व कातिलान खानवादा ए रसूल को जमाना न कभी भूल पाया है ना कभी भूल पाएगा क्योंकि हर साल मोहर्रम की पहली तारीख से लेकर 40 दिनों तक पूरी दुनिया में अजादारी , ताज़ियादारी , अलम बरदारी, जिक्रे शहादत , खिचड़ा ,सबील, हलवा , शरबत और जिक्रे हुसैन की महफिल सजाने वाले हुसैनी मुसलमान शोहदा ए कर्बला की याद मनाते हैं और अहले बैत नबी की नूरानी , रूहानी शख्सियात से मोहब्बत का इजहार करते हुए अल्लाह और रसूल के फरमान के मुताबिक सकून ए कल्ब का समान पैदा करते हैं क्योंकि मोहब्बत हुसैनी मोहब्बत रसूल ﷺ है और मोहब्बत रसूल ﷺ के बगैर कोई भी मुसलमान मोमिन नहीं हो सकता, हुसैन का दीदार मोहम्मद ﷺ अरबी का दीदार है हुसैन मोहरे नबूवत के सवार हैं , हुसैन से मोहब्बत करना हुक्म परवरदिगार है जो सुन्नी,हनफी मोमिन है वह हुसैन के तरफदार है जो दिल से हुसैनी है वह ताजियादार है क्योंकि हजरत इस्माइल अलैहे सलाम की कुर्बानी का हुक्म हुआ तो

बदले में दुम्बा कटा उस दिन की याद को हम लोग बकरीद के त्यौहार के नाम से मनाते हैं और करबला में नवासा ए मोहम्मद ﷺ व आले मोहम्मद ﷺ का गर्दन कटा तो इस दिन की याद को हम लोग यौमे आशूरा के तौर पर क्यों न मनाए जबकि हम मुसलमान मिल्लत ए इब्राहीम हैं लेकिन उम्मत ए मोहम्मदी है , सुनते इब्राहिमी मनाए तो सुन्नते मोहम्मदी क्यों ना मनाए, कुरआन करीम में इरशाद बारी ताला है ।

وفدینٰہ بذبحٍ عظیم وتکنہ علیہ فی ال آخرین

तर्जुमा ऐ ! इब्राहिम बख्श दिया (इस्माइल) को बड़ी कुर्बानी से और छोड़ दिया तेरे आखिरी (करबला) वालों के लिए : यानी

व फिदया बेजबहे अजीम मे हजरत इस्माइल को खुदा ने बचा लिया और **तर्कना अलैह फिल आखेरीन** मैं छोड़ दिया अजीम कुर्बानी जमाना आखिर वालो यानी आले इस्माईल करबला वालों के लिए जमाना आखिर में जो अजीम कुर्बानी पेश की गई । हजरत इब्राहिम के फरजंद हजरत इस्माइल की ख्वाबीदह कुर्बानी को हजरत सैय्यद फातिमा के लख्ते जिगर हजरत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम ने मुक्कमल कर दिया । हम उम्मते मोहम्मदी है इसलिए ताज़िया को सामने रखकर आयते कुरआनी की तिलावत करते हैं हजरत इमाम हुसैन की सब्र व बहादुरी की दास्तान पढ़ते हैं और यजीदी जुल्म के खिलाफ एहतेजाज करते हैं और उन दोनों वहाबी और तबलीगी जमात में यजीदी मलऊन को जन्नती साबित किया जा रहा है और उस बात का बरमला इजहार करने में जरा भी शर्म व हिचकचाहट उन यजीदियो को नहीं होती , हम हुसैनीयों की दुआ है कि ऐसे लोगों का हश्र यजीदी मलऊन के साथ हो और हम

ताज़ियादार हुसैनीयो का हश्र हजरत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम के साथ हो । ताज़ियादार कयामत तक खत्म ना होंगे क्योंकि ताज़ियादारी में बेपनाह रूहानी कुवत मौजूद होती हैं रूहानी कुवत को खत्म करना इंसानों के बस की बात नहीं है इसलिए वली अल्लाह जो रूहानी कुवत के मालिक होते है उनकी रुहानी कुवत और बरकत ताज़िया और ताज़ियादारो के साथ होती है इसलिए हर वह इंसान हमारा भाई है जो ताज़ियादारी में शरीक होकर हजरत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम से अकीदत व मोहब्बत का इजहार करता हो चाहे वह किसी कौम या किसी मजहब से ताल्लुक रखता हो ।

इंसान को बेदार तो हो लेने दो
हर कौम पुकारेगी हमारे हैं हुसैन

और एक आशिक ए अहले बैत शायर ने बड़े अजीब बात कह दी –

खुदा का शुक्र है हम हिंदूओं मे कोई शब्बीर का कातिल नहीं है ।

अल्लाह का लाख-लाख शुक्र है कि हम हिन्दुस्तानी जमहूरी मुल्क में जिंदगी गुजारते हैं वरना हम भी वहाबीयत और बादशाहियत के कानून के मुताबिक मजहबी और सामाजिक जिंदगी गुजारने पर मजबूर होना पड़ता जो लोग हिंदुस्तान में शाह सऊद की खुद साखता इस्लामी कानून और मुल्ला मोहम्मद उमर की जबरी कानून और पाकिस्तान की फौजी कानून का ख्वाब देख रहे हैं वह दरअसल इस

मुल्क के गद्दार हैं और उन्हें हिंदुस्तान में पैदा होने और रहने का कोई हक नहीं है इस्लामी मोहम्मदी कानून का मिजाज जमहूरी है और ख्वाजा गरीब नवाज की बरकत से हिंदुस्तान का कानून भी जमहूरि है इसलिए हमें अपने मुल्क की जमहूरी मिजाज और कानून पे फक्र है ये अलग बात है कि कुर्सी की लालच में चंद फिरका परस्तो ने हिंदुस्तानी जमहूरी निजाम को यरगमाल बना रखा है लेकिन ये देर पा नहीं है हिंदुस्तान में जमहूरियत थी जमहूरियत हैं और जमहूरियत कानून ही चलेगा , फिरका परस्ती चाहे हिंदू की हो या मुसलमान की हो उसे खत्म होना ही पड़ेगा इसलिए कि ये मुल्क सूफी संतों का है और सूफी संतों के देश में मोहब्बत का कानून ही चल सकता है ।

मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना
हिंदी हैं हम वतन है हिंदुस्तान हमारा

हम अहले तरीकत में सुफिया ए इस्लाम और हजरत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम के अकीदत मंद है इसलिए सुफिया ए कराम के नुक्ता ए नजर से हर इंसान को अपना भाई और हर मजहब का एकता एहतराम करते हैं , जो लोग इंसानियत से मोहब्बत करते हैं हम उनका दिल से एहतराम करते हैं जो मुल्क दुश्मन, समाज दुश्मन और इंसानियत के दुश्मन हैं वह इस मुल्क के दुश्मन हैं और जो इस मुल्क के दुश्मन हैं वह हमारे दुश्मन हैं ।
क्योंकि हजरत इमाम हुसैन को ऐसे ही करीबी दुश्मनों ने मैदाने कर्बो बला में बेदर्दी से शहीद किया ,खुदा ना करे कि भारत पे ऐसे किसी मलऊन व मनहूस का साया पड़े।

हमारा मुल्क भारत

दुनिया का सबसे बड़ा जमहूरी मुल्क है इस मुल्क में किसी भी तरह की फिरका परस्ती की कोई गुंजाइश नहीं है इस मुल्क में तमाम मजाहेब के पैरोकार को यकता हकूक हासिल है और हर सच्चे हिंदुस्तानी को चाहिए कि इस मुल्क के कानून का एतराम करें इसी कानून हिंद के मुताबिक बुनियादी हकूक ,आजादी तहरीर , आर्टिकल 19 (1) के तहत हर मकतबे फिक्र के लोगों को अपनी अच्छी बातो की तबलीग व अशाअत का हक़ हासिल है।

अंजुमन गुलामने आले रसूल ﷺ

ने भी हिंदुस्तानी कानून के दायरे में रहते हुए इस किताबचे में तमाम हवाला मुस्तंद उलमाए अहले बैत , मुहद्दिस अहले बैत, मुहक्किक अहले सुन्नत की किताबों से दिए गए हैं । राफजी शिया किसी दूसरे मकतबा ए फिक्र के किताबों से कोई हवाला नहीं लिया गया है और उलमाए अहले सुन्नत ये तमाम पुरानी किताबें भारत के सबसे बड़े लाइब्रेरी , नेशनल लाइब्रेरी में मौजूद है और हुकूमत हिंद की तहवील में है हर शख्स बिला रोक टोक उन तमाम किताबों का मुतावला कर सकते हैं । इसके बावजूद भी किसी भी फर्द या अदारा को इस किताबचा पे ऐतराज हो तो कानूनी चारा जोई सिर्फ कोलकाता की अदालत में होगी , उलमाए इस्लाम से मोअद्दबाना

दरख्वास्त है की फतवा बाजी के बजाय इस्लामी तवारीखी किताबों व हकायेक का मुताला करे। बात बिलकुल साफ हो जाएगी जो लोग नेशनल लाइब्रेरी की रेसायी से दूर है वह मौलाना सैय्यद अब्दुल्लाह मौदूदी की किताब , खिलाफत और मलूकियत का मुताला कर सकते हैं इसमें वह तमाम हकायक मौजूद हैं जो लाइब्रेरी की असल किताबों में है कुतुबबीन हजरात की आसानी के लिए किताबों का नाम और बुक नंबर दिए जा रहे हैं ताकि आप हजरात को मुताला में आसानी हो ।

قرآن شریف	تفسیر ابن کثیر، نور القلوب	
ترجمہ صحیح بخاری شریف	حضرت امام بخاری	U297.13A349jm
ترجمہ جامع ترمذی شریف		U297.13A356jf
کامل ابن اثیر		U953.I125Kvol.3-4pt1
طبری		U953,T11Itvol.3pt1
ازالۃ الخلفاء	حضرت ولی اللہ محدث دہلویؒ	U297.90Sh617ivol.1-2
تاریخ خلفاء	حضرت مولانا جلال الدین سیوطیؒ	U939.47Su944ti
تاریخ اسلام	عبدالحلیم شرر	U939.47A172vol.1-2
تاریخ ابن خلدون	ابن خلدون	U9001137kh
تاریخ خلافت	عبدالماجد بدایونی	U297.09A224t
اشرف التواریخ	سید شاہ محمد اکبر	U297.09Mu542asvoll.1-2
خلافت بنوامیہ	مطبوعہ کراچی	U.297.07I125amvol.1-2
ابوالفداء	قلمی نسخہ	U297.09A362tvol.1-2
امارت معاویہ	مراۃ الحقائق	U297.09A365mvol.192
شمس التواریخ	مولوی سعادت اللہ	U297.09V663Svol.1.2.3
تاریخ اسلام	معین الدین احمد ندوی	U297.09Mu686tvol.1.2.3.4

۴۴

معین الارواح	انتظام اللہ صحابی	
روح اسلام-اسپرٹ آف اسلام	آنریبل سید امیر علی	
مخزن الخزائن	شاہ نیاز بے نیاز بریلوی رحمتہ اللہ علیہ	
تاریخ نجد وحجاز	مفتی عبدالقیوم قادری ہزاروی	
براہین قاطعہ جواز تعزیہ	صوفی بسمل شاہ قمرئی ہند رحمتہ اللہ علیہ	
معارج النبوۃ نقش مصطفیٰ ﷺ	حضرت مولانا ملا معین واعظ الکاشفی الہرویؒ	
اخبار الاخیار	شیخ عبدالحق محدث دہلوی رحمتہ اللہ علیہ	
کشف المحجوب	حضرت داتا گنج بخش علی ہجوری لاہوریؒ	
صواعق محرقہ	علامہ ابن حجر الہیتمی رحمتہ اللہ علیہ	

मसनद इमाम अहमद बिन हंबल , गनीयतुल तालेबीन हयात हजरत इमाम अबू हनीफा, हालात इमाम शाफ़ई ,मनाकिब हजरत ख्वाजा गरीब नवाज़ र०अ०, राहे इस्लाम , राहतल कुलूब, ज्वामउल कलम, करामात रज़ाकीया , फतावह अजीजिया , शामे कर्बला , तबसरतुल ईमान, अजाफातुल यौमिया, अनवारूर्रहमान , अल तनवीरूल जेनान ,दाफयेउल एजाम , जवाजुत्ताजिया , मेनल अदलतुशरीयत , एरशादुन्नीम लद फउलशीम ,रेसाला अजालतुल अवहाम , करामाते निज़ामिया ,मिश्काते हक्कानिया , खिलाफत व मलूकियत, तहज़ीबुल तहज़ीब, शहीदे आजम, शहीद इब्ने शहीद , आमिना का लाल , मदारेजुन्नबुअत, रोज़नामा सियासत

मोहर्रम नम्बर हैदराबाद दकन 2002 ईसवी।

ताज़ियादारो से अपील :-

मज़हब ए इस्लाम सरापा पाकीज़ा मजहब है इसकी इब्तिदा व इन्तिहा पाक ही पाक है इसलिए हम ताज़ियादारो का हर तरीका पास होना चाहिए । मोहर्रम में पहली तारीख से दसवीं तारीख तक रोज रखें अगर ना हो सके तो 9 और 10 मोहर्रम के रोज़े तर्क ना करें । बड़ा सवाल है हजरत गौसुल आलम महबूबे यज़दानी सुल्तान सैय्यद अशरफ जहांगीर सिमनानी कुदुस सिर्रूहू ने फरमाया कि फ़कीर मशरिक से मगरिब तक मसायेख रूवे जमीन से मिला सबका यही मामूल था जोकि अमाल आशूरा में मलहूज रखना चाहिए । अव्वल गुसल और दूसरे नमाज आशूराए तीसरे रोज़ा चौथे आँख में सुरमा लगाना , पाँचवी यतीम के सर पर दस्ते शफ़कत फेरना , छठे दो मुसलमानों में सुलह करा देना, सातवें खाना ज्यादा पकवाना और बच्चों को खिलाना आठवीं मुलाकात हाकिम की करना, नवीं अयादत मरीज़ की करना, दसवीं दुआएं मगफी़रत वालदैन व जमीये मोमीनिन को करना।

नोट- ताज़िया शरीफ़ में शिरक़त फरमाने वाले हजरात सर पे टोपी जरूर रखें - अल्लाह ताला हर मुसलमान भाई को हिदायत अता फरमाए। आमीन-

फक्त ख़ाकपाए औलिया

सूफी सईद मजहर अशरफी गफ्फिरलहू

